स्वन-विवेचन

§ 12. मैथिलीक स्वन आ' स्वनिम

(1) स्वन - भाषाशास्त्रमे भाषाक हेतु उपयोगी ध्वनि स्वन कहबैत अछि। एहि स्वनसभक रैखिक प्रतीक थिक वर्ण (अक्षर) आ' तकर सुविन्यस्त सूची थिक वर्णमाला। मैथिलीमे प्रचलित वर्णमाला सारिणी 1 मे देखू।

सारिणी 1 : वर्णमाला
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ और अं अः ।।
क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण।
त थ द ध न। प फ ब भ म।
य र ल व। श ष स ह ।।

ई वर्णमाला प्राभा (वैदिक आ' संस्कृत भाषा) लिखबाक हेतु सुदूर अतीतमे बनल छल, मैथिली लिखबाक हेतु नहि। तेँ एहिमे मैथिलीक हेतु किछु स्वन फाजिल अछि तँ किछु स्वनक अभाव सेहो अछि। मैथिलीमे संस्कृत, अरबी, फारसी, अङरेजी इत्यादि अनेक भाषासँ बहुत रास शब्द आयल अछि। एहन शब्द सभमे उक्त वर्णमालाक प्रायः सभ स्वनक प्रयोग मैथिलीमे भेटत। तखन जे फाजिल कहल तकर दू अभिप्राय।

पहिल ई जे मैथिलीमे आयल बाह्य शब्दमे उक्त वर्णमालाक ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ञ, ण्, य्, व्, श् तथा ष् एहि दस स्वनक प्रयोग भनहि होइत हो आओर तकर उच्चारण बाह्य शब्दमे पढ़ल-लिखल लोक भनहि क' लैत होथु, परन्तु विशुद्ध मैथिली शब्दमे एहि सभक प्रयोग नहि अछि। सर्वसाधारणक जिह्वा पर ईसभ स्वंन आबिओ नहि सकैत अछि। ध्यान राखक थिक जे विशुद्ध मैथिली शब्द से थिक जाहिमे उक्त स्वन सभ नहि हो तथा मैथिलीक स्वनतान्त्रिक नियम पालित हो।

दोसर ई जे सूक्ष्म शास्त्रीय दृष्टिएँ कोनो भाषाक स्वन सभक सूचीमे केवल स्व रहबाक चाही, ओकर विविध प्रभेद नहि, किएक तँ भेदोपभेदक कतहु अन्त नहि छैक। उदाहरण देखल जाय। केयो कखनहु किनल बजताह, कखनहु कीनल कखनहु कीऽनल, कीऽऽनल इत्यादि। एकर दू प्रभेद लघु आ गुरु तँ वर्णमालामे अछि परन्तु लघुतर, गुरुतर आ' गुरुतम प्रभेद किएक नहि अछि ? सभ स्वरक नासिक्य प्रभेद किएक नहि अछि ? एहन प्रश्न सभक समाधान आगाँ भेटत।

सारिणी 2

मैथिलीक स्वनिम

(क) स्वर

स्वन	वैज्ञानिक अभिवर्णन	पारम्परिक अभिवर्णन
अ	निम्न मध्य केन्द्र स्वर	अर्धविवृत कण्ठ्य
आ	निम्न केन्द्र स्वर	विवृत कण्ठ्य
उ	उच्च पश्च स्वर	संवृत ओष्ठ्य
ओ	उच्च मध्य पश्च स्वर	अर्धसंवृत ओष्ठ्य
ऑ	निम्न मध्य पश्च स्वर	अर्ध विवृत ओष्ठ्य
इ	उच्च अग्रस्वर	संवृत तालव्य
ए	उच्च मध्य अग्र स्वर	अर्धसंवृत तालव्य
ऍ	निम्न मध्य अग्र स्वर	अर्धविवृत तालव्य

(ख) व्यंजन

कण्ठ्य	तालव्य	मूर्धन्य	दन्त्य	ओष्ठ्य	अभिवर्णन
क	च	ट	त	प	स्पर्श अघोष अल्पप्राण
ख	छ	ठ	थ	फ	स्पर्श अघोष महाप्राण
ग	ज	ड	द	ब	स्पर्श अघोष अल्पप्राण
घ	झ	ढ	ध	भ	स्पर्श अघोष महाप्राण
ङ	–	–	न	म	नासिक्य अल्पप्राण
ङ्ह	–	–	न्ह	म्ह	नासिक्य महाप्राण
–	–	र	ल	–	पार्श्विक अल्पप्राण
–	–	–	ल्ह	–	पार्श्विक महाप्राण
–	–	–	स	–	ऊष्म अघोष
ह	–	–	–	–	ऊष्म घोष

(2) स्वनिम-उपर्युक्त शंकाक समाधान हेतु आधुनिक भाषाशास्त्री लोकनि ई सिद्धान्त स्थापित कयलनि जे भाषाक विवेचनमे ओतबे स्वन अपेक्षित अछि जतबासँ अर्थमे अन्तर सिद्ध हो। जेना पातमे प् हटाय ओकरा स्थानमे ल् राखि देल जाय तँ ओ लात भय जायत आ' ओकर अर्थो बदलि जायत। तेँ प् तथा ल् भिन्न-भिन्न स्वन भेल। एहि प्रकारक अर्थभेद किनल, कीनल, कीऽनल इत्यादिमे नहि छैक तेँ लघु, गुरु, गुरुतर, गुरुतम इत्यादि स्वन भाषाक विवेचनमे भिन्न-भिन्न नहि मानल जाय। अतः मैथिलीमे इ एकटा स्वतन्त्र स्वन भेल आ' ई, ईऽ इत्यादि ओकरे रूपान्तर भेल। एहि प्रकारक स्वतन्त्र (अर्थात् अन्य सभ प्रकारक प्रतिनिधित्व कयनिहार) स्वन भाषाशास्त्रमे स्वनिम (phonema) कहबैत अछि आ' तकर सभ प्रभेद (जें अर्थभेदक नहि हो) ओकर उपस्वन (allophone) कहबैत अछि। एहि कसौटी पर जतेक स्वनिम मैथिलीमे पाओल जाइत अछि तकर वर्गीकरणपूर्वक सूची सारिणी 2 मे देखल जाय।

उक्त दूनू सारिणीमे आयल कतोक स्वन/स्वनिम सभक प्रसंग मैथिलीक सन्दर्भमे जे किछु विशेष बात ज्ञातव्य अछि आब से देखल जाय।

§ 13. स्वरक सामान्य गुण

मैथिलीमे स्वरसभक उच्चारणमे आन भाषा सभक अपेक्षा किछु अधिक तरलता अछि। फलतः एके स्वर भिन्न-भिन्न स्थितिमे आ' भिन्न-भिन्न शब्दमे भिन्न-भिन्न प्रकारेँ उच्चरित होइत अछि। मुख्यतः दू गोट गुण विभेदक होइत अछि-मात्रा आ' नासिक्यता।

(1) मात्रा-मात्रा थिक उच्चारण-कालक लम्बाइ। तदनुसार प्राभामे स्वरक दू प्रभेद छल लघु आ गुरु। संस्कृतक व्याकरणमे एक प्रभेद प्लुत सेहो कहल गेल अछि, परन्तु से स्वनिम नहि थिक तेँ ओकर गणना नहि कयल। प्राभामे मात्रा (लघुगुरुभेद) स्वनिमिक छल, जेना पठन्ति "पढ़ैत छथि", पठन्ती "पढ़ैत (महिला)", पुर "नगर", पूर "प्रवाह", वचन "शब्द", वाचन "पढ़नाइ"। मैथिलीमे ई लघु-गुरु भेद स्वनिमिक नहि रहल तथा एकटा तेसर प्रकार विकसित भेल लघुतर स्वर। फलतः स्वरक मात्रानुसार तीन प्रकार भेल : लघुतर, लघु आ' गुरु। ई तीनू प्रकार केवल अ' इ तथा उ केर अछि, आन स्वरक केवल दू प्रकार अछि-गुरु आ' लघु। वर्णमालामे आ, ए, ओ तथा औ केर लघुरूप तथा अ, इ आओर उ केर लघुतर रूप नहि अछि। एहि अभावक पूर्ति हेतु एहि पुस्तकमे अधोबिन्दुक प्रयोग कयल गेल अछि। जँ अध गोबिन्द गुरु वर्णमे हो तँ ओकर उच्चारण लघु बूझल जाय, जँ लघुवर्णमे हो तँ गुरु बूझल जाय, आओर जँ अधोबिन्दु दू गोट हो तँ लघुतर बूझल जाय'। ई चिह्न आवश्यकतानुसार केवल व्याकरणमे भेटत, अन्यत्र नहि।[2]

सारिणी-3

स्वर सभक मात्रानुसारी प्रकार

लघु-	अ	आ	इ	उ	ए	ऐ	ओ	औ
उदा.-	अपन	आओर	इनार	उधार	एकैस	बैसला	ओहार	बौआएब
गुरु-	अ़	आ	ई	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
उदा.-	घ़र	आम	ईह	ऊक	एक	ऐहब	ओस	औखध
लघुतर-	अ़	-	इ.	इ.	-	-	-	-
उदा.-	मौन	-	तीनि	बालु	-	-	-	-

(2) नासिक्यता-नासिक्य स्वर प्राभामे अति विरल अछि; तकर ठीक उनटा मैथिलीमे अति अधिक। एक रोचक उदाहरण देखल जाय।

तेँ दूनू भाइँ जेँ हँसलेँ तेँ बँचलेँ।

कुल 13 स्वरमध्य 8 नासिक्य - 52 प्रतिशत। परम्परागत सात कारक मध्य कर्म, करण, सम्प्रदान आ' अपादान एहि चारूक चिह्न नासिक्य स्वरबाला अछि। एतेक अधिक नासिक्य स्वर आन कोनहु भाषामे कदाचिते भेटत। नासिक्यता मैथिलीमे स्वनिमिक थिक। निम्नलिखित उदाहरण देखल जाय।

पाँक "कादो" : पाक "रन्हनाइ"।

बाँट "बखरा" : बाट "मार्ग"।

आँक "अंक" : आक "एक झाड़"।

घोँटब "पीअब", घोटब "रगड़ि चिक्कन करब"।

नासिक्यता स्वरक गुण थिक, कोनो स्वर नहि, तेँ वर्णमालामे एकर रैखिक प्रतीक नहि अछि। परन्तु प्राचीन कालहिसँ एकर प्रतीक चन्द्रबिन्दुँ प्रचलित अछि। हिन्दी आदि भाषामे चन्द्रबिन्दुक बदला अनुस्वार चलैत अछि, परन्तु मैथिलीमे से परिपाटी नहि अछि। हँ, यान्त्रिक असुविधाकेँ देखैत केओ-केओ[1] तथा[2] मात्रामे चन्द्रबिन्दुक बदला अनुस्वार लिखैत छथि, जेना कैंच वा कैँच; पेंच वा पेँच।

1. मैथिलीभाषी स्वयं बूझि जाइत छथि जे कतय लघु, गुरु वा लघुतर उच्चारण करी। तेँ ई चिह्न मैथिलीक सामान्य लेखनमे कतहु नहि भेटत।
2. आजुक लेखक गुरु उच्चारणक संकेत ऽ चलाओल अछि, परन्तु ई संकेत क्षतिपूरक गुरुत्व सूचित करबाक हेतु सामान्यत: शब्दक अन्तहिमे लगाओल जाइत अछि। एहि मात्रानुसारी प्रकार सभक उदाहरण सारिणी 3 में देखल जाय।

मैथिलीमे सभ स्वर नासिक्यो पाओल जाइत अछि। यथा

अँकुसी < अङ्कुश "छोट आँकुस"।

आँग < अङ्ग "शरीर"।

सिँगार < शृङ्गार "सजावट"।

सीँघ < शृङ्ग "पशुक एक अंग"।

उँगारब < उद्गार - "लेप लगाय साफ करब"।

ऊँट < उष्ट्र "एक पशु"।

एँड़ी "पायरक निचला भाग"।

ऐँठ < अपमृष्ट "मुह लगने अपैत"।

औँठा < अङ्गुष्ठक "पायरक मोटका आँगुर"।

उपर्युक्त उदाहरण सभसँ इहो स्पष्ट होयत जे नासिक्यता अधिक ठाम प्राभाक नासिक्य व्यंजन (ङ्, ञ्, ण्, न् तथा म्) सँ विकसित भेल अछि।

चन्द्रबिन्दु आ' अनुस्वारक बीच भारी अन्तर अछि। अनुस्वार एक व्यंजन स्वनक प्रतीक थिक, तेँ भारी होइत अछि आ' अधिक ठाम नासिक्य व्यंजन बदला लिखल जाइत अछि, जेना अंक : अङ्क; कंचन : कञ्चन। चन्द्रबिन्दु कोनो स्वरक प्रतीक नहि, स्वरक एक गुण मात्र थिक।

नासिक्यता बहुत स्वर पर, आगाँ-पाछाँक नासिक्य व्यंजनक प्रभावेँ उच्चारणमे अनायास आबि जाइत अछि, परन्तु से लेखमे अंकित नहि कयल जाइत अछि। जेना मैथिलक मुँहसँ सुनब हँम गाँम कँहाँ गेलँहुँ; परन्तु लिखल जाइत अछि हम गाम कहाँ गेलहुँ। एकरा संक्रामी नासिक्य कहि सकैत छी। ई नासिक्य गुण कत' पसरत आ' कत' नहि से विवेचन एतय बाहुल्य होयत। केवल उदाहरण देखल जाय। माघ मासमे माधव अयलाह-एतय पहिल आ' तेसर मा शुद्ध थिक, किन्तु दोसर मा तथा मे थिक तँ नासिक्य परन्तु दूनू लिखल जाइत अछि बिनु चन्द्रबिन्दुहिक। आकाशमे मेघ अछि एतय दूनू मे केर उच्चारण भिन्न-भिन्न अछि। उच्चारणक इएह स्थिति देखि मैथिलीक विद्वान् लोकनि हिन्दीसँ आयल कारकचिह्न में मे चन्द्रबिन्दुकेँ अनावश्यक बूझि हटाय देलनि।

जहिना समीपस्थ नासिक्य व्यंजनक प्रभावेँ स्वर नासिक्य भ' जाइत अछि तहिना नासिक्यक प्रभावेँ व्यंजन नासिक्यता पाबि न् भ' जाइत अछि। जेना चन्द्रसँ चान, चन्दन सँ चानन।

§ 14. विभिन्न स्वनक वैशिष्ट्य

आब एक-एक कए स्वन-सभक विशिष्टता देखल जाय।

अ- ई मात्रानुसार तीन प्रकारक अछि। लघु एकर सामान्य प्रकृति थिक। गु उच्चारण आघातवश [18.] होइत अछि, जेना हमर घर चलह। अपूर्ण उच्चार [105]मे जत' कोनो स्वन लुप्त भेल रहैत अछि तत' पूर्ववर्ती अ गुरु उच्चरित होइ अछि, जेना कह़, कत़ गेल छल (प्रचलित लेख कहऽ, कतऽ गेल छलऽ; पूर्ण उच्चारण कहह, कतए गेल छलह)। एकर लघुतम उच्चारण केवल स्वनभक्ति, [15 (i)] केर अन्तमे होइत अछि, जेना कर ताह (कर + ताह)।

एकर उच्चारणक एक विशेषता थिक वर्तुलता। अर्थात् एकर उच्चारणमे ठोर कनेक गोल भ' जाइत अछि, मुदा ततेक नहि जतेक बङलामे। एहि कारणेँ कतहु-कतहु ई निर्णय करब कठिन भ' जाइत अछि जे अ थिक कि ओ, जेना मन कि मोन ? बन कि बोन ? ई वर्तुलता आघातवश होइत अछि, अतः आघात आगाँ ससरने वर्तुलता हटि जाइत अछि, यथा, मोन किन्तु मनरोग, सोन किन्तु सनपटुआ। बहुत ठाम वर्तुलता ओष्ठ्य (पवर्गीय) स्वनक निकट होइत अछि, जेना मसी > मोसि, मश > मोस, बन > बोन।

आ-एकर उच्चारण सामान्यतः गुरु होइत अछि। मात्रासन्तुलन [18-19] क क्रममे ई अ भ' जाइत अछि। ध्यान देबाक थिक जे ई आ अ केर गुरु रूप नहि, एक पृथक् स्वर थिक, तहिँ सारिणी 3 में एकर उल्लेख पृथक् कयल गेल अछि। एकर लघु रूप थिक आ जकर प्रयोग विशेषतः प्रामै. मे भेटैत अछि। जेना

आओर कहब कत (8 मात्रा)।

पाओल पराभव अनुभव बेरि (15 मात्रा)।

अइसना बाहर होइतहु साति। (15 मात्रा)।

ई-एकर तीन प्रभेद अछि : लघु, गुरु आ' लघुतर, जेना इनार; मीत; धोबिनि। ई जखन शब्दक अन्तमे पड़ैत अछि तखन एकर तीन गति होइत अछि :

गुरु (दीर्घ) भ' जायब- हिन्दी, उर्दू आदि भाषामे शब्दक अन्तमे लघु इकार प्रायः नहि होइत अछि। तकरा प्रभावेँ मैथिलीमे बहुत शब्दक अन्तिम इ आजुक मैथिलीमे गुरु भ' गेल अछि। यथा,

प्रामै	डोरि	तेलि	धोबि	मालि	हरदि	चूड़ि	चूल्हि।
हिन्दी	डोरी	तेली	धोबी	माली	हरदी	चूड़ी	चूल्ही।
नमै	डोरी	तेली	धोबी	माली	हरदी	चूड़ी	चूल्ही।

ई नवीन स्वरूप सभ एखनहु अमानक आ' वैभाषिक मानल जाइत अछि। अँगिका विभाषामे तँ प्राय: सभ अन्तिम लघु स्वरक उच्चारण सदा गुरुए होइत अछि। जेना

वैभाषिक - भरी लोटा पानी पिबी गेलकाँ हिनी।

मानक - भरि लोटा पानि पिबि गेलाह (हिनि)।

लुप्त भ' जायब- बहुत ठाम ई द्रुत उच्चारणमे लुप्त भ' जाइत अछि, विशेषत: स्त्रीप्रत्यय तथा असमापी क्रियापदमे। जेना,

उच्चा-देख-देखके सीख लेलक (क्रियापदमे)

मानक-देखि-देखिकेँ सीखि लेलक।

उच्चा-बहिन चल गेल (स्त्रीप्रत्ययमे)

मानक-बहिनि चलि गेलि।

विशेष देखू अपूर्ण उच्चारण § 103 मे।

मध्यनिहित होयब-द्रुत उच्चारणमे ई कतहु-कतहु अपनासँ पूर्वक व्यंजनकेँ टपि ताहिसँ पूर्वक अ, आ अथवा उ केर आगाँ आबि जाइत अछि। भाषाशास्त्रमे ई अभिलक्षण मध्य निहिति (epenthesis अर्थात् शब्दक मध्यमे चलि आयब) कहबैत अछि। जेना

उच्चा -	रइब	दाइल	पाइल	अइछ	सुइनके।
मानक -	रबि	दालि	पानि	अछि	सुनिकेँ।

लघुतर होयब-एकर लघुतर उच्चारण केवल स्वनभक्ति (syllable) केर अन्तमे होइत अछि। ई प्रवृत्ति क्रमश: एकर लुप्त होयबाक सूचना दैत अछि। जेना पानि+पिआइ एहि समासक शुद्ध उच्चारण थिक पनिपिआइ। कनेक शिथिल उच्चारणमे एकर पहिल इकार लघुतर भेल आ' द्रुत उच्चारणमे लुप्त भेल, यथा पनपिआइ। लघुतर होयब लुप्त होयबाक पूर्वावस्था थिक।

ओना मात्रा मैथिलीमे स्वनिमिक नहि होइत अछि, तैओ एहि इ केँ गुरु कयने कतहु-कतहु अर्थ बदलैत अछि :

चालि	मालि	चानि	दाबि	सूति	दारु।
चाली	माली	चानी	दाबी	सूती	दारू।

उ-बहुत बात इ तथा उ मे समान अछि। मात्रानुसार तीन प्रकार एकरो होइत अछि। मध्यनिहिति एकरो होइत अछि। यथा

मध्यनिहित - बाउल ताउर गोउर आउद

मानक - बालु तारु गोरु आरु

मैथिलीमे उ तथा ओ नितान्त भिन्न-भिन्न प्रकृतिक स्वन थिक। हिन्दीमे लघु ओ नहि अछि; ओकरा स्थानमे सर्वत्र उ चलैत अछि, परन्तु मैथिलीमे नहि। यथा

मैथिली - घोड़सार मोलायम छोड़ायब दोकान।

हिन्दी - घुड़सार मुलायम छुड़ाना दुकान।

ऋ,ॠ तथा लृ, लॄ-ई दूनू जोड़ा भारोपीय र् तथा ल् केर स्वरात्मक लघु आ' गुरु प्रतिरूप थिक। एहि मध्य केवल **ऋ** (आ' नाममात्र ॠ) प्राभामे जीवित अछि, लृ आ' लॄ तँ मानू सुदूर अतीतमे लुप्त भ' गेल, तैओ पारम्परिक वर्णमालामे आसन जमओने अछि।

ए तथा **ओ**-दूनू मूलतः गुरु थिक, मात्रा-सन्तुलन वश लघु होइत अछि आकि स्वरक आगाँ अयलापर गुच्छमे। जेना एक : एक बोलिआ; तेल : तेलाह; ओठ : ओठपातरि, घोड़ा : घोड़सवार; आएलाह; अओताह; भर जाए; भए जाओ।

मैथिलीमे जे ऍ/ऑ प्रामैक अए/अओसँ विकसित भेल अछि देखू आगाँ तकर उच्चारण किछु-किछु अए/अओ-सन (किछु अधिक विवृत) होइत अछि, एही कारणेँ मैथिलीक किछु पुरान लेखकलोकनि एहन ऍ/ऑ केँ ै/ौ सँ लिखैत छलाह वा स्वरयुग्म अए/अओसँ। जेना

(क) कथि लए अहाँ कएँ एतबओ सआँ सन्तोष हो।

(ख) कथी लै अहाँ कैँ एतबौ सौं सन्तोष हो।

(ग) कथी ले अहाँकेँ एतबो सँ सन्तोष हो।

ए/ओ मैथिलीमे प्राभाक य्/व् केँ अपदस्थ क' देलह अछि (देखू आगाँ य/व् मे)।

ऐ तथा **औ**-दूनू क्रमशः अइ/अउ स्वरयुग्म थिक, कोनो पृथक् स्वर नहि। तथापि सूक्ष्म दृष्टिएँ एतबा कहल जा' सकैत अछि जे दूनूक उच्चारणमे किछु अन्तर अछि। अइ तथा अउ मे दूनू स्वरक मात्रा समान अछि, अर्थात् अ सेहो लघु (एक मात्रा) तथा इ आओर उ सेहो लघु। परन्तु ऐ/औ मे अ. लघु छैक, किन्तु इ/उ लघुतर। प्रकारान्तरेँ कहि सकैत छी जे अइ/अउ विलम्बित उच्चारण थिक, ऐ/औ द्रुत उच्चारण। ज्ञातव्य जे द्रुत उच्चारणमे अन्ते भाग प्रभावित होइत अछि तेँ केवल इ/उ

लघुतर भेल, अ नहि। एहि दूनूमे जखन अ सेहो लघुतर भ' जाइत अछि तखन दूनू मिलि एक लघु स्वर भ' जाइत अछि : लघुतर (आधा मात्रा) + लघुतर = लघु (एक मात्रा)। जेना

मञे दौड़ि ऐलिहुँ कहए तुअ पास (15 मात्रा)

ऐ तथा औ पृथक् स्वन नहि थिक तेँ स्वनिम सूचीमे नहि अछि।

ऍ तथा **ऑ**-ई दूनू क्रमशः अर्धविवृत तालव्य आ' अर्धविवृत ओष्ठ्य स्वर कहबैत अछि, किएक तँ दूनूक उच्चारणमे, सामान्य ऐ तथा और केर तुलनामे, कल्ला किछु अधिक अलगैत अछि।

ई दूनू ने प्राभामे छल, ने मभामे। तहिँ पारम्परिक वर्णमालामे एकर प्रतीक नहि अछि। एहि पुस्तकमे ए/आ मे अर्धचन्द्र लगाय एहि स्वरक संकेत कयल गेल अछि। ऍ केर उच्चारण उर्दूक कैद आ' अङरेजीक hand केर स्वर सन होइत अछि। ऑ केर उच्चारण उर्दूक फौज आ' अङरेजीक thought केर स्वर-सन होइत अछि।

मैथिलीमे ई दूनू स्वर दू बाटेँ आयल अछि। एक दिस मैथिलीक प्रसिद्ध स्वरयुग्म अए/आए केर संकोचनसँ, जेना अएलाह सँ ऍलाह; पओलनि सँ पॉलनि। दोसर दिस व्रजभाषा, उर्दू, हिन्दी आदिक प्रभावसँ आयल। एहि दूनू स्वनक प्रतीक पारम्परिक वर्णमालामे नहि अछि, तेँ मैथिलीमे ऐ/और एही वर्णसँ ऍ/ऑ सेहो लिखल जाय लागल। फलतः ऐ तथा औ तीन-तीन स्वनक प्रतीक भ' गेल। जेना

(क) ऐलाह=अएलाह पौलहुँ=पओलहुँ

(ख) ऐल=आएल पौल=पाओल

(ग) ऐल=ऍल पौल = पॉल

प्रस्तुत ऍ तथा ऑ केर प्रतीक कम्प्यूटरमे एखन धरि नहि बनल अछि।

बङला, असमिआ, नेपाली आदि भाषामे ऍ केर प्रतीक जफला (आधा य + आकार, च्या) चलैत अछि, यथा न्याशनाल (National), क्याम्पस (Campus)। किन्तु तकर प्रयोग केवल अङरेजी शब्दमे चलल; अन्यत्र उच्चारण ऐ भ' गेलहुपर लेख परम्परानुसारे होइत रहल, यथा बंगला लेख एक, उच्चारण ऍक; दॆ लेख देख, उच्चारण दॅख। मैथिलीमे जेह/सेह पहिने शुद्ध ए स्वन बाला छल, आब दूनूक उच्चारण जॅह/सॅह भ' गेल तँ वर्तनी सेहो बदलिकेँ जैह/सैह क' देल गेल।

अं-पारम्परिक वर्णमाला ई केवल अनुस्वारक प्रतीक थिक, अ तकर अवलम्बमात्र थिक। ई मैथिलीमे व्यंजनसँ संयुक्त ङ्, न् तथा म् केर रूपान्तर थिक। यथा

ङ्-अंक [अङ्क], भंग [भङ्ग]।

न्-कंचन [कन्चन], कंटक [कन्टक] अंत [अन्त]।

म्-चंपा [चम्पा], संपति [सम्पति]।

स्, श् तथा ह् सँ पूर्व एकर उच्चारण मैथिलीमे ङ् होइत अछि, हिन्दी उर्दूजकाँ न् नहि। यथा

लेख	**मैथिली उच्चारण**	**हिन्दी उच्चारण**
संसार	सङ्सार	सन्सार
संशय	सङ्शय	सन्शय
संहार	सङ्हार	सन्हार

अनुस्वार कोनो स्वतन्त्र स्वन नहि, केवल तीन नासिक्य व्यंजनक वैकल्पिक रैखिक प्रतीक थिक, तेँ स्वनिमिक वर्णमालामे नहि अछि।

ई विशुँ मैथिलीमे प्राय: सर्वत्र चन्द्रबिन्दु बनि पूर्ववर्ती स्वरक माथ पर आबि गेल अछि, जेना अंक सँ आँक; हंस सँ हाँस, चंद्र सँ चाँद वा चान। अंडा, खंड एहन शब्दसभ विशुद्ध मैथिली नहि, अर्धतत्सम थिक : विशुद्ध मै. होयत आँड़ा, खाँड़।

अ: – एहि स्वनक नाम थिक विसर्ग अर्थात् त्याग, किएक तँ एकर उच्चारण श्वासक अधिक मात्रामे सहसा त्यागसँ होइत अछि। कण्ठकेँ कनेक जाँति श्वास छोड़ने ह् उच्चरित होइत अछि, आ' बिनु जँतने विसर्ग-दूनूमे इएह अन्तर अछि। मैथिलीमे ई तत्सम शब्दहिमे पाओल जाइत अछि, तँहि स्वनिम-सूची (सारिण 2) मे ई नहि अछि।

ङ्–ई प्राभासँ प्रामै तक विकलांग व्यंजन रहल, कारण जे एकर प्रयोग सर्वत्र शब्दक मध्यहिमे आ' सेहो स्ववर्गीय व्यंजनसँ संयुक्ते होइत अछि। मैथिलीमे ई मुख्यत: तत्सम आ' अर्धतत्सममे चलैत छल, परन्तु नमैमे एकर विचित्र प्रकारेँ पुनर्जागरण भेल अछि जे निम्नलिखित उदाहरणहिसँ स्पष्ट होयत :

रङ्ग>राँग>राङ   सङ्ग>सँग>सङ   अङ्गन>आँगन>अङना

ङ् गेल तँ ग रहल ; ग् गेल तँ ङ् रहल। एहि प्रकारेँ ई नमै मे असंयुक्त रूपहुँ चलय लागल। मुदा तैओ एकरा आंशिक विकलांगता रहिये गेलैक, किएक तँ शब्दक आदिमे नहि आबि सकैत अछि।

ञ् – ई केवल तत्सममे, ततहु केवल चवर्गसँ पूर्व संयुक्त रूपहिमे, पाओल जाइत अछि। मैथिलीमे ई स्वन नहि अछि। तेँ स्वनिम सूचीमे नहि देल गेल। एकर रैखिक प्रतीक तँ प्रामै. मे खूब भेटत, यथा मञे, गोसाञुनि, कञेन, जञो, तञो, परन्तु सभ ठाम मानू ई चन्द्रबिन्दुक काज करैत अछि, अर्थात् जाहि स्वरक संग ई आयल हो तकरा नासिक्य बूझू, जेना मञे=मएँ (तुल हिन्दी मैं), गोसञि = गोसाइँ।

ड़् तथा **ढ़्** – ई दूनू ड् तथा ढ् केर उपस्वन थिक, किएक तँ अन्तर केवल उच्चारणमे अछि, अर्थमे नहि। तहिँ वर्णमालामे ई नहि राखल गेल। एकर दू प्रकारक उच्चारण प्राभा-कालहिसँ होइत आएल अछि, किन्तु नीचाँ बिन्दु देब हालमे चलल। ज्ञातव्य जे नेपाली भाषामे उच्चारण दू प्रकारक होइतहुँ अधोबिन्दु नहि देल जाइत अछि। नेपालमे छपल मैथिलीअहुमे प्रायः अधोबिन्दु नहि भेटत। ध्यान देबाक थिक जे मैथिलीभाषी ड़ तथा ढ़ दूनू मे मूर्धन्यता ततेक घटा दैत छथि जे दूनू क्रमशः र तथा र्ह सुनि पड़त।

ण् – इहो केवल तत्सममे पाओल जाइत अछि। ततहु ई विकलांग स्वर थिक किएक तँ ई शब्दक आदिमे नहि आबि सकैत अछि। नमै केर आरम्भ-कालमे किछु लेखक ँड़ केर स्थान मे ण लिखैत छलाह, जेना माण (माँड़), डाण (डाँड़), अणाची (अड़ाँची)।

य् – ई स्वतन्त्र स्वनिम नहि, ए केरद व्यंजनीभूत उपस्वन थिक जे तत्सम आ' विदेशी शब्दमे चलैत अछि। तत्समहुमे मैथिलीमे ई विकलांग थिक, किएक तँ एकर उच्चारण शब्दक आदिमे आओर र्, ह् तथा य् सँ पूर्व य् नहि, ज् होइत अछि, भनहि लिखल जाय य्। यथा, यज्ञ [जग्यँ], कार्य [कार्ज], सह्य [सह्ज], शय्या [सज्जा], किन्तु नयन [नएन/नयन], समय [समए/समय]। ई विशुद्ध मैथिलीमे नहि चलैत अछि। कयल, आयल, आबय एहि सभमे य् तत्त्वतः आ' मूलतः ए थिक, य् नहि। ए केर स्थानमे य् लिखबाक परिपाटी हालमे चलल अछि।

पहिने ई देखल जाय जे ई य् आयल कोना। जखन दू स्वर सम्मुखीन होइत अछि तँ उच्चारण-क्रममे एकटा ध्वनि अनायास बीचमे टपकि पड़ैत अछि। एहन ध्वनि भाषाशास्त्रमे अन्तः श्रुति (glide) कहबैत अछि। ई श्रुति अयला पर आयल सँ आयेल भ' गेल आ' अगिला ए लघुतर होइत-होइत अ केर स्वन-सन भ' गेल, ठीक ओहिना जेना हिन्दीमे आएगा > आयेगा > आयगा। मैथिलीमे ए सँ अ भेलहु पर सहज

उच्चारणमे आयेल-सन सुनि पड़त। आब तँ पढ़ल लोक वर्णानुसारी उच्चारण करए जा रहल अछि, तेँ कयेल/कयल सेहो बेसी सुनबैक, किएक तँ कतेकोलोकनिक एक वर्ग एहि ए केर बदला सर्वत्र य लिखब चला देलनि अछि। फलतः य-श्रुति आब य् अन्तस्थ स्वनक रूप धारण क' ए केर उपस्वन बनि गेल अछि, आओर देखू [15].

व् – ई विशुद्ध मैथिलीमे नहि, केवल तत्सममे चलैत अछि; ततहु एकर उच्चारण केवल व्यंजनक बाद व् होइत अछि, आन सभ ठाम ब। यथा वायु [बायु], पवन [पबन], स्वामी [स्वामी], विश्व [विस्व]। मैथिलीमे य-श्रुति जकाँ व-श्रुति सेहो पाओल जाइत अछि, किन्तु य जकाँ लेखमे नहि चलैत अछि। यथा कौआ [कौवा], सुआसिनि [सुवासिनि], पाओल [पावोल]। जानि नहि किएक खाएल मे य-श्रुति चलल किन्तु पाओल मे व्-श्रुति नहि चलल; मैआकेँ मैया लिखि सकैत छी तँ बौआकेँ बौवा किएक नहि ? य्-श्रुति/व्-श्रुतिक विषयमे हिन्दिअहुमे इएह हाल अछि, किया (किआ नहि); किन्तु हुआ (हुवा नहि)। परन्तु असमिआमे व-श्रुति चलैत अछि, जेना गुवा "गुआ"; गाँवर मनुह "गामक मनुख"।

श् – ई विशुद्ध मैथिलीमे नहि अछि। तत्समहुमे एकर उच्चारण स् होइत अछि; केवल पढ़ुआक मुहेँ तालव्य सुनब।

ष् – ई केवल तत्सममे चलैत अछि। ततहु एकर उच्चारण टवर्गसँ पूर्व स् होइत अछि, आन ठाम ख्। यथा, षष्ठी [खसठी], दोष [दोख], ऋषि [रिखि]।

ङ्ह्, न्ह् तथा म्ह् – ई तीनू नासिक्य महाप्राण व्यंजन मैथिलीमे स्वनिम थिक जे निम्नलिखित उदाहरणसँ सिद्ध होइत अछि :

सिङार "प्रसाधन" : सिङ्हार "शेफालिका"।

कान "श्रवण" : कान्ह "स्कन्ध"।

समार "दोसर जोत" : सम्हार "सुव्यवस्थित करब"।

ल्ह् – ई ल् केर प्राणित रूप थिक आ' निम्नलिखित उदाहरणसँ स्वनिम सिद्ध होइत अछि :

गल्ह "पक्षीक बच्चा" : गेल "गत"।

लुल्हुआएब "गट्टा डुबाएब" : लुलुआएब "भगाएब"।

वर्णमालाक आरम्भमे मंगलार्थ आँजी सिद्धिरस्तु सिखाओल जाइत छल आ' अन्तमे क्ष त्र ज्ञ। वर्णमालासँ एकरा कोनो सम्बन्ध नहि।

§ 15. स्वनक विविध अभिरचना

स्वन आ' तकर प्रकार देखल। आब देखल जाय जे मैथिलीक शब्दमे एहि स्वनसभक क्रम-विन्यास केहन-केहन रहैत अछि। ई नियत क्रमविन्यास भाषाशास्त्रमे स्वनिक अभिरचना (phonetic pattern) कहबैत अछि। स्वन अनेक प्रकारक अछि तेँ ओकर अभिरचना सेहो अनेक प्रकारक भ' सकैत अछि। ताहि मध्य किछु महत्त्वपूर्ण अभिरचना एतय देखाओल जाइत अछि।

(1) स्वनभक्ति (Syllable)

स्वनिक अभिरचना जनबाक हेतु पहिने ई जनबाक होयत जे स्वनभक्ति की थिक। जतबा स्वन कोनो शब्दमे एक आयासेँ अविच्छिन्न उच्चरित भ' सकैत अछि से स्वनभक्ति कहबैत अछि। ई चारि प्रकारक अछि : (i) एकमात्र स्वर बाला, जेना ई, ओ, (ii) एक व्यंजन आ' एक स्वरबाला, जेना जे, से, हँ : (iii) एक स्वर आ' एक व्यंजन बाला, जेना अन्त मे अन्-, उक्ति मे उक्; तथा (iv) एक व्यंजन, एक स्वर आ' एक व्यंजनबाला, जेना सन्त मे सन्-, छत्र मे छत्। मात्रानुसार स्वनभक्ति दू प्रकारक अछि: लघु आ' गुरु। जाहिमे गुरु स्वर हो अथवा अन्तमे व्यंजन हो से गुरु थिक, आन सभ लघु। स्वनभक्तिक संख्याक अनुसार मैथिली शब्दक आठ प्रकार अछि आओर एकर प्रत्येक प्रकारक गुरु-लघु अनुक्रमक अनुसार अनेक उपप्रकार अछि। लघु स्वनभक्ति एक मात्रा मानल जाइत अछि आ' गुरु दू मात्रा। लघु स्वनभक्ति संकेत थिक ठाढ़ रेखा (i) तथा गुरु स्वनभक्तिक अर्धाकार (ऽ)। उक्त स्वनिक अभिलक्षणक अनुसार शब्दमे जतेक तरहक अभिरचना पाओल जाइत अछि से सारिणी 4 मे देखल जाए।

एहि सारिणीसँ अनेक तथ्य उद्घाटित होइत अछि। पहिल आ' सभसँ महत्त्वपूर्ण तथ्य ई बहरायल जे **मैथिलीक शब्दमे गुरु अक्षर अन्तसँ चारि मात्रा भितरे रहि सकैत अछि,** ताहिसँ पूर्वक सभ अक्षर सदा लघुए रहत। एहि नियमक नाम थिक

सारिणी 4
मैथिली शब्दक स्वनिक अभिरचना

	शब्द	गुरु-लघु अनुक्रम	मात्रा	स्वनभक्ति
1.	जो, आ. खो	S	2	1
2.	घर, जन, नब	II	2	2
3.	हाथ, कान, खेत	SI	3	2
4.	बेटा, पोथ	SS	4	2
5.	टका (विरल)	IS	3	2
6.	अपन, हमर	III	3	3
7.	अनका, अपना	IIS	3	4
8.	मचान, अनेक	ISI	4	3
9.	बतासा, ओसारा	ISS	5	3
10.	भानस, बासन	SII	4	3
	–	SIS	5	3
	–	SSI	5	3
11.	भिनसर	IIII	4	4
12.	हरिअरी	IIIS	5	4
13.	कचनार	IISI	5	4
14.	उजागर	ISII	5	4
15.	बुधिआरी	IISS	6	4
16.	देखलहक	IIIII	5	5
17.	कमरसारि	IIISI	6	5
18.	एकसरुआ	IIIIS	6	5
19.	अगरजानी	IIISS	7	5
20.	कनपातर	IISII	6	5
21.	देखओलकन्हि	IIIIII	6	5
22.	उपरबदरा	IIIIIS	6	6
23.	कचरमकूट	IIIIISI	7	6
24.	गदहपचीसी	IIIIISS	7	6
25.	अलछखापड़ि	IIISII	8	6
26.	पठबओलथिन्ह	IIIIIII	7	6
27.	उपड़बओताह	IIIIISI	7	7
28.	उपरसहकिआ	IIIIIIS	7	7
29.	उपड़बबिताथिन्ह	IIIIIIII	7	7
			8	8

शेष लघुता नियम वा मात्रा सन्तुलन नियम (Rule of Short Antepenultimate)। एकर विवेचन आगाँ (18–19) सविस्तार कयल जायत।

दोसर महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ई बहराइत अछि जे मैथिलीक शब्दक अन्त केवल पाँच अभिरचनामे भ' सकैत अछि (i) 1111 बचपन, (ii) 115 समता, (iii) 151 अकास, (iv) 511 बासन, तथा (v) 55 बेटा। एहि सभसँ भिन्न अभिरचना अन्तमे अग्राह्य अछि, जेना 515 तथा 551।

तेसर निष्कर्ष ई प्रकट होइत अछि जे मैथिलीक शब्दमे स्वनिमिक संख्या न्यूनतम एक आ' अधिकतम आठ भ' सकैत अछि।

सारिणी - 5

स्वर-समुच्चय

(1) अइ	-	अइहब	(18) उओ	-	आलुओ
(2) अउ	-	चउठी	(19) एआ	-	मेआर
(3) अए	-	अएलाह	(20) एओ	-	देओर
(4) अओ	-	अओताह	(21) ओअ	-	सोअदगर
(5) आइ	-	आइ	(22) ओआ	-	सोआद
(6) आउ	-	आउ	(23) ओइ	-	कोइली
(7) आए	-	आएल	(24) ओए	-	होएत
(8) आओ	-	आओर	(25) अइअ	-	भइअन
(9) इअ	-	दिअ	(26) अइआ	-	भइआ
(10) इआ	-	इआर	(27) अउअ	-	नउअबा
(11) इउ	-	पिउलन्हि	(28) अउआ	-	कउआ
(12) इए	-	आइए	(29) आइए	-	आइए
(13) इओ	-	आइओ	(30) आइओ	-	भाइओ
(14) उअ	-	महुअक	(31) उइआ	-	सुइआ
(15) उआ	-	ठकुआ	(32) ओइआ	-	लोइआ
(16) उइ	-	दुइ	(33) अउअइ	-	बउअइनी
(17) उए	-	भालुए	(34) अइअओ	-	तइअओ

चारिम निष्कर्ष ई बहराइत अछि जे मात्राक संख्या कमसँ कम दू आ' अधिकतम आठ भ' सकैत अछि। शब्दक अधिक लम्बाइक श्रेय एकर क्रियापद-प्रणालीकेँ छैक। आन कोनहु भाषामे शब्दक लम्बाइ कदाचिते एतेक टा भेटत।

(2) स्वन-समुच्चय

प्राभामे स्वरक तुरत बाद स्वर आयब (स्वरक समुच्चय) प्राय: वर्जित छल आ' सन्धिद्वारा तकर परिहार कयल जाइत छल। मभामे ई नियम हटि गेल आ' लगातार दू वा तीन स्वर खूब चलय लागल। यथा पिअअम "प्रियतम", पाउअ "प्राकृत", णिअ "निज"।

तकरा बाद अनेक नभामे बीचमे य्-श्रुति, वा व्-श्रुति लगा स्वरक समुच्चयन दूर क' देल गेल, जेना हिन्दी पाआ > पाया, बङला गिआ > गिया, असमिआ गूआ > गूवा। मैथिलीमे य्-श्रुति वा व्-श्रुति नहि चलल, तेँ एहिमे दू-दू वा तीन-तीन स्वरक समुच्चय पाओल जाइत अछि। किछु चारि स्वरक सेहो। मैथिलीमे स्वर-समुच्चय 34 अभिरचना भेटैत अछि (दे. सारिणी 5)।

द्रष्टव्य जे समुच्चयन केवल विषम स्वरक होइत अछि। समस्वरक समुच्चय मैथिलिअहिमे नहि, सभ नभामे वर्जित अछि।

मैथिलीमे स्वर-समुच्चयसँ बँचबाक तीन उपाय अछि। पहिल, बीचमे य्-श्रुति लगायब, जेना धिआ > धिया, भैआ > भैया। दोसर, स्वर-संकोचन, जेना अआंताह > औताह; अएलाह > ऐलाह, तेसर, ए केँ य कए, देब, जेना कएल > कयल, आएल > आयल, कए > कय।

(3) व्यंजन-समुच्चय (संयुक्त व्यंजन)

प्राभामे संयुक्त व्यंजनक प्रकार आ' संख्या बहुत अधिक छल। मभामे व्यंजन अपने वर्गक व्यंजनसँ संयुक्त होइत छल। ताहूमे घोषक संग घोष आ' अघोषक संग अघोष। फलत: मभामे चारि प्रकारक संयुक्त व्यंजन पाओल जाइत अछि :

(i) अघोष अल्पप्राण + अघोष अल्पप्राण/महाप्राण - क्क क्ख च्च च्छ ट्ट ट्ठ त्त त्थ प्प प्फ।

(ii) घोष अल्पप्राण+घोष अल्पप्राण/महाप्राण-ग्ग ग्घ ज्ज ज्झ ड्ड ड्ढ द्द द्ध ब्ब ब्भ।

(iii) नासिक्य/अनुस्वार + व्यंजन - ङ्क, ङ्ख, ङ्ग, ङ्घ, ञ्च, ञ्छ, ञ्ज, ञ्झ, ण्ट, ण्ठ, ण्ड, ण्ढ, ण्ण, न्त, नथ, न्द, न्ध, न्न, म्प, म्फ, म्ब, म्भ, म्भ, सिंह, हंस, कंस।

नभामे आबि मभाक सभ संयुक्त व्यंजनक पहिल स्वन लुप्त भ' गेल आ' ताहि क्षतिक पूर्ति हेतु ओहिसँ पूर्वक स्वर गुरु भ' गेल, जेना प्राभा अर्कसँ मभा अक्क आ' ताहिसँ नभा आक।

जनबाक थिक जे अक्क मे तीन मात्रा अछि (अक् दू मात्रा, क एक मात्रा)। ताहिमे क हटलहुपर अ केर गुरुत्व टिकल रहल तेँ ओ आ भ' गेल। एकरे नाम पड़ल मात्राप्रतिपूरक गुरुत्व (compensatory lenthening)। व्यंजन-समुच्चयक सरलीकरणक प्रक्रियाक विवेचन आगाँ कयल जायत।

नभामे संयुक्त व्यंजनक सरलीकरण तँ भ' गेल, परन्तु कोना-ने-कोना जहाँ आघात एक डेग आगाँ बढ़ल कि फेर ओ लुप्त व्यंजन जागि उठल आ' संयुक्त व्यंजनक पुनरागमन भेल। जेना

चक्र > चक्क > चाक > चक्का; पत्र > पत्त > पात > पत्ता।

आघात अन्तमे आयल तेँ अन्तमे आ तथा लुप्त व्यंजनक पुनर्जागरण। शेष बात आघात प्रकरण (18) मे देखू।

(4) स्वर-व्यंजन अभिरचना

विशुद्ध मैथिलीमे सामान्य स्वर व्यंजन अभिरचना व्यंजन + स्वर + व्यंजन + स्वर + व्यंजन + स्वर .... इएह देखल जाइत अछि। यथा मोहन काल्हि गेलाह मे

म्	ओ	ह्	अ	न्	अ	क्	आ	ल्ह्	इ	ग्	ए	ल्	आ	ह्	अ
व	स	व	स	व	स	व	स	व	स	व	स	व	स	व	स

बीच-बीचमे कतहु सामान्यतः दुइ आ' तीन स्वरक समुच्चय भेटल, आ' शब्दक अन्त दिस दू व्यंजनक (एहि विषयमे विशुद्ध मैथिली जापानी भाषासँ मिलैत अछि।) जेना अएलाह, चक्का।

परन्तु तत्सम शब्दमे स्वर-व्यंजन अभिरचनामे स्वर + व्यंजन-स्वर-व्यंजन क्रम तँ समान अछि किन्तु स्वर-समुच्चय प्रायः नहि भेटत, आ' व्यंजन-समुच्चय डेग-डेग पर भेटत-कतहु दू तँ कतहु तीन; ताहिसँ अधिक विरल। जेना :

वक्तव्य	=	व्	अ	क्	त्	अ	व्	य्	अ
		व	स	व	व	स	व	व	स
राष्ट्र	=	र्	आ	ष्	ट्	र्	अ		
		व	स	व	व	व	स		

§ 16. स्वनसभक स्रोत

मैथिलीक प्रायः सभ स्वन प्राभासँ, मुख्यतः संस्कृतसँ आयल अछि। संस्कृतक किछु स्वन मैथिली तद्‌भवहुमे टिकल अछि, किछु बदलि गेल अछि। एहि टिकबाक आ' बदलबाक किछु उदाहरण देखल जाय:

(क) स्वर

अ- (1) अ सँ, अकान < अकर्ण; (2) आ सँ, अकास < आकाश; (3) ऋ सँ, बसहा < वृषभ, अनट < अनृत।

आ- (1) आ सँ, आस < आशा; (2) अ सँ, आक < अर्क, आध < अर्ध।

इ- (1) इ सँ, इनर < इन्द्र; (2) ई सँ, इरखा < ईर्ष्या; (3) ऋ सँ, घिनाएब < घृणा; रिन < ऋण।

उ- (1) उ सँ, उकठ < उत्कट; (2) ऊ सँ, उसर < ऊषर; उनचास < ऊनपञ्चाशत्।

ऊ- (1) ऊ सँ, ऊन < ऊर्णा; (2) उ सँ, ऊक < उल्का; (3) ऋ सँ, बूढ़ < वृद्ध।

ए- (1) ए सँ, एगारह < एकादश; (2) ऐ सँ, जेठ < ज्यैष्ठ; (3) य् सँ, बेथा < व्यथा, बेबहार < व्यवहार; (4) अ सँ, केँचुआ < कञ्चुक, केबाड़ < कपाट।

ऐ- (1) ऐ सँ, चैत < चैत्र, (2) अइ सँ, ऐहब < अविधवा, ऐँठ < अपमृष्ट।

ओ- (1) ओ सँ, ओठ < ओष्ठ; (2) औ सँ, पोता < पौत्र; (3) अव सँ, ओदरब < अवदृ, ओस < अवश्याय; (4) उ सँ, पोखिरि < पुष्करिन्।

औ- (1) औ सँ, औखद < औषध; (2) अउ/अव सँ, औँठा < अङ्गुष्ठ, औँसब < अवमृश, पतौड़ा < पत्रपुट।

(ख) व्यंजन

क- क सँ, ताक < तर्क, कगना < कङ्कण।

ख- (1) ख सँ, खनती < खनित्री; (2) क्ष सँ आँखि < अक्षि, लाख < लक्ष; (3) ष सँ, बरख < वर्ष, दोख < दोष।

ग- (1) ग सँ, गाभ < गर्भ; (2) क सँ, सगर < सकल, साग < शाक; (3) ज्ञ सँ, गेआन < ज्ञान।

घ- (1) घ सँ, घिउ < घृत, बाघ < व्याघ्र; (2) ग सँ, घर < गृह, घास < ग्रास।

ङ- देखू नासिक्य (ग)।

च- (1) च सँ, चाक < चक्र; (2) त्य सँ, साँच < सत्य, नाच < नृत्य।

छ- (1) छ सँ, छाता < छत्र, (2) त्स सँ, माछ < मत्स्य, उछाह < उत्साह; (3) क्ष सँ, माछी < मक्षिका, छिप < क्षिप्; (4) स सँ, छुतका < सूतक, छत्तीस < सप्तत्रिंशत्; (5) श सँ, छाल < शल्क, छीमड़ि < शिम्बा, छबरा < शाव।

ज- (1) ज सँ, जीह < जिह्वा; (2) द्य सँ, जूआ < द्यूत, बिजुरी < विद्युत; (3) य सँ, सेज < शय्या, जग < यज्ञ, काज < कार्य।

झ- (1) ध्य सँ, जूझब < युद्ध्य, बूझब < बुध्य, (2) श्य सँ, झामर < श्यामल।

ट- (1) ट सँ, खाट < खट्वा; (2) त्र सँ, टूटब < त्रुट, मनटीका < मणित्रिक; (3) त सँ, काटब < कृत, बाट < वर्त्म।

ठ- (1) ष्ट/ष्ठ सँ, जाठि < यष्टि, काठ < काष्ठ; (2) स्थ/थ सँ, ठाम < स्थाम, पठाएब < प्रस्थाप।

ड- (1) ड सँ, डाइनि < डाकिनी; भाँड़ < भाण्ड; (2) द सँ, डोल < दोलक, डाभ < दर्भ; (3) ट सँ, पाँड़रि < पाटलि, बड़ < वट; (4) ल सँ, फड़ < फल, ताड़ < ताल।

ढ- (1) ठ सँ, पढ़ब < पठ, पीढ़ी < पीठिका; (2) द्ध सँ, बाढ़ि < वृद्धि, बूढ़ < वृद्ध।

ण्- देखू नासिक्य (ग)।

त- त सँ, तपत < तप्त।

थ- स्त/स्थ सँ, थन < स्तन, थाना < स्थानक।

द- द सँ, दहिन < दक्षिण, कादो < कर्दम।

ध- ध सँ धूआँ < धूम, दूध < दुग्ध, धुनि < ध्वनि।

न- देखू नासिक्य (ग)।

प- प सँ, पात > पत्र, साँप < सर्प।

फ- (1) फ सँ, फार < फाल; (2) प सँ, फरसा < पर्शु, फानब < स्पन्द।

ब- (1) ब सँ, बान्हब < बन्ध, नेबो < निम्बु; (2) व सँ, बात < वार्ता, सब < सर्व।

भ- भ सँ, भात < भक्त।

(ग) नासिक्य

ङ- (1) ङ्ग/ङ्क सँ, रङ < रङ्ग, आङुर < अङ्गुल, कगना < कङ्कण, (2) द्ग सँ, मूङ < मुद्ग, माङुर < मद्गुर।

ङ्ह- (1) ङ्ग/ङ्घ सँ, जाङ्ह < जङ्घा, नाङ्ह < लङ्घ, सूङ्ह < शृङ्ग।

न- (1) न सँ, नाति < नप्तृ, नह < नख; (2) ज्ञ सँ, नाति < ज्ञाति, [illegible]
नइहर < ज्ञातिगृह; (3) ल सँ नोन < लवण, नीपब < लिम्प; (4) ण सँ, [illegible]
< गण ।

न्ह- (1) न्ध सँ, कान्ह < स्कन्ध, सान्हि < सन्धि; (2) स्न सँ, पन्हाएब < [illegible]
कान्ह < कृष्ण ।

म- (1) म सँ, आम < आम्र ।

म्ह- (1) म्भ सँ, कुम्हार < कुम्भकार, थम्ह < स्तम्भ; (2) ष्म सँ, कुम्हर,
कूष्माड; (3) क्ष्म सँ, पम्ह < पक्ष्म ।

(घ) अन्तस्थ

र- (1) र सँ, राति < रात्रि; (2) ल सँ, तर < तल, फार < फाल ।

र्ह- देखू ढ़ ।

ल- ल सँ, लाह < लाक्षा, बेल < बिल्व ।

ल्ह- ह्ल सँ, पोल्हाएब < प्रह्लाद ।

(ङ) अष्मा

स- (1) स सँ, सब < सर्व; (2) श सँ, बीस < विंश, सए < शत; (3) ष सँ,
महिस < महिष ।

ह- (1) ह सँ, हाथ < हस्त; (2) भ सँ, लहब < लभ, हाँड़ी < भाण्ड; (3) ख
सँ, रेह < रेखा; (4) घ सँ, हथहड़ < हस्तघट; (5) ध सँ, महुअक < मधुपर्क;
(6) थ सँ, जूही < यूथिका ।

कतोक स्वनक विकास आपवादिक रूपेँ भेल अछि । जेना, उपरि > ऊपर, उच्च > ऊँच, कञ्चुक > केँचुआ, कपाट > केबाड़, मधुसूदन > मकसूदन, शुकदेव > सुखदेब, पताका > पतक्खा, कन्दु > गेन, अर्चि > आँच, सर्प > साँप, भरत > भरथा, गदाधर > गजाधर, जगन्नाथ > जगरनाथ, विक्रमादित्य > बिकरमाजित, जलकेलि > झलहेरि, ग्रन्थि > गेँठ, डमरु > डामरु, उदुम्बर > डूमरि, शुकतुण्डक (> सु[illegible]डँड़अ) > सूँड़ा, कपाट > केबाड़, घटय > गढ़ब, भवन्ति > (होअन्ति >) होथि, बहिर > बाहर/बहार, निम्बु > नेबो, सर्व > सभ, दूर्वा > दूभि, मार्गण > माङब, मुद > मूड़, मद्गुर > माङुर, मुद्रिका > (मुन्द्रिका) > मुनरी, विपादिका > बेमाए, > शाल्मली > सीमर, शाप > सराप, उल्लास > हुलास, छाया > छाह, आकार > हकार इत्यादि ।

§ 17. स्वनसभक विकास-क्रम

आब ई देखल जाय जे संस्कृतक कोन-कोन स्वन मैथिलीमे कोन-कोन रूपमे परिणत भेल अछि।

ऋ केँ छाड़ि संस्कृतक सभ स्वर मैथिलीमे टिकल अछि, परन्तु मैथिलीक ध्वनि-नियमक अनुसार कतहु गुरुसँ लघु आ' लघुसँ गुरु भ' गेल अछि। यथा, अर्क > आक; हस्त > हाथ; आकाश > अकास; पाताल > पताल; दीपक > दिआ; भिक्षा > भीख; गौरी > गौरि; ईश्वर > इसर; षष्ठी > छठि; मुष्टि > मूठि; प्रभूत > बहुत; मूर्ख > मुरुख; सूर्य > सुरुज।

(1) ऋ स्वन चारि रूपमे परिणत भेल अछि:

(क) अ/आ रूपमे-दढ़ > दृढ़ : वृषभ > बसहा; गृह > घर; विकृत > विकट; अनृत > अनट; मृति > मट्टि > माटि ; नृत्य > नच्च > नाच।

(ख) इ/ई रूपमे-कृष्ण > किसुन; घृणा > घिन; दृढ़ > दिढ़; वृश्च > बीछ; घृत > घी; धृष्ट > ढीठ।

(ग) उ/ऊ रूपमे-मुइल > मृत : भृज्ज > भूज : शृणोति > सुनए; पृच्छ > पूछ।

(घ) इरि रूपमे-वृक्ष > बिरिछ; तृप्त > तिरपित; गृहस्थ > गिरिहथ, पृथ्वी > पिरथी।

(2) ऐ तथा **औ** क्रमश: ए तथा ओ भ' गेल अछि, जेना तैल > तेल, गौर > गोर।

(3) ण्, व् तथा **श्** ई तीनू क्रमश: न्, ब् तथा स् भ' गेल अछि। यथा, प्राण > परान; शण > सन > सोन; प्रणाम > परनाम; वन > बन/बोन; नव > नब/नऽब; आशा > आस; शाक > साग; श्यामल > सागर।

(4) ष् कतहु **ख्** भ' गेल अछि, कतहु स्। यथा, षष्ठी > खस्ठी (उच्चारणहिमे अन्तर, लेख संस्कृतवत्); षड्रस > खटरस; हर्ष > हरख; वर्षा > बरखा; रुष् > रुसब; दोष > दोस; माषक > मासा।

(5) संस्कृतक सभटा संयुक्त व्यंजन सरलीकृत भ' गेल अछि। सरलीकारणक निम्नलिखित नियम अछि :

(क) एक व्यंजन (जे कोमल हो से) लुप्त भ' जाइत अछि आओर ओहिसँ पूर्ववर्ती स्वर गुरु भ' जाइत अछि। यथा, भक्त > भात; दुग्ध > दूध; अर्क > आक; मुद्ग < मूङ; चक्र > चाक; सप्त > सात; लग्न > लाँगट; नप्तृ > नाति। कतहु-कतहु

केवल लोप देखल जाइत अछि, गुरुता नहि । यथा-पक्ष > पख; सर्व > सब;
> महुअक; अन्यत्र > अनत ।

(ख) जतय आघात अन्तिम स्वर पर पड़ैत अछि ततय दुनू व्यंजनक
समीकरण होइत अछि, पूर्व स्वरक गुरुत्व नहि । यथा-पत्र > पत्ता/पात; पृष्ठ >
भक्तक > भत्ता; छत्रक > छत्ता/छाता ।

(ग) नासिक्तय + स्पर्शमे नासिक्य अपनासँ पूर्व स्वरकेँ अनुनासिक क'
बनाय स्वयं लुप्त भय जाइत अछि । यथा, अङ्क > आँक ; अङ्ग > आँग; पञ्जर >
पँजर; कण्ट > काँट; अण्ड > आँड़; अन्य > आन; झम्प > झाँप; हंस > हाँस;
> बाँस; कांस्य > काँस ।

(घ) दू स्वरक बीचमे अघोष स्पर्श (क्, प्, ट् इत्यादि) कतहु-कतहु घोष (ग्,
ब्, ड् इत्यादि) भ' जाइत अछि । यथा-शाक > साग; सकल > सगर; शोक > सोग;
आपाक > आबा; वट > बड़, तपति > तबए; पठति > पढ़ए ।

(ङ) दू स्वरक बीचमे अल्पप्राण स्पर्श स्वन लुप्त होइत अछि । यथा निकट >
निअर; शृगाल > सिआर; मधुपर्क > महुअक; कर्णकीलिका > कनइली > कनैली;
राजपुत्र > राउत । कतहु-कतहु एहन स्वनक स्थानमे स्थानमे य/ए आबि जाइत अछि ।
यथा वचन > बअन > बएन/बयन; राजा > राअ > राय/राए ।

(च) दू स्वरक बीच महाप्राण तथा ऊष्म स्वनक स्थानमे ह् भ' जाइत अछि ।
यथा, नख > नह; रेखा > रेह; निघात > निहाए; लग्नघट > लगहड़; कथ > कह;
यूथिका > जूही; मधु > महु; कण्टफल > कटहर; सौभाग्य > सोहार; द्वादश > बारह;
पाषाण > पहान ।

(छ) दन्त्य व्यंजन मूर्धन्य स्वनक लगमे मूर्धन्य भ' जाइत अछि । यथा, तर्कु >
टाकु; त्रुटि > टूटि; मृति > माटि; वृन्त > बेँट; वृद्धि > बाढ़ि ।

(ज) ऊष्म + व्यंजनमे ऊष्म लुप्त होइत अछि, ओहिसँ पूर्वस्वर गुरु भ' जाइत
अछि आओर अगिला व्यंजन महाप्राण भ' जाइत अछि । यथा, अष्ट > आठ; मस्त >
माथ; स्तन > थन; कृष्ण > कान्ह । सूक्ष्म रूपेँ कहल जायत जे ऊष्मात्व (एच)
अगिला व्यंजनपर चल जाइत अछि ।

(झ) तवर्ग + य् चवर्ग भ' जाइत अछि । यथा - (क) त्य् > च्-सत्य > साँच; नृत्य
> नाच; (ख) द्य् > ज् - अद्य > आज; वाद्य > बाजा; वैद्यनाथ > बैजनाथ; (ग) ध्य् >
झ् - मध्य > माझ; सन्ध्या > साँझ; बन्ध्या > बाँझ; उपाध्याय > ओझा ।

(ञ) तवर्ग + स् छ् भ' जाइत अछि। यथा, वत्स > बाछा; मत्स्य > माछ; उत्साह > उछाह।

(ट) क्ष् (अर्थात् क् + ष्) कतहु ख् भ' जाइत अछि तँ कतहु छ। यथा, क्षेत्र > खेत; रक्ष > रख्; पक्ष > पख; बुभुक्षा > भूख; लक्ष > लाख; क्षण > छन/खन; क्षार > खार/छार; क्षुर > खुर/छुर।

§ 18. आघात

(1) मात्रात्मक आघात

विभिन्न भाषामे तीन प्रकारक आघात (accent) चलैत अछि : मात्रात्मक, बलात्मक आ' रागात्मक। प्राभामे रागात्मक आघात छल। ऊपर चढ़ल स्वर उदात्त कहबैत छल। नीचाँ उतरल अनुदात्त आ' बीचमे उपर-नीचाँ होइत स्वरित। उदात्त भेलापर कतहु-कतहु स्वरक मात्रा (लम्बाइ) सेहो बढ़ि जाइत छल। जेना रज्-धातुसँ राग : (आद्युदात्त, तेँ रा गुरु), रक्तम् (र अनुदात्त, तेँ लघु) उपर्युक्त रागात्मक आघातक प्रभाव कतहु-कतहु मैथिलीमे सेहो देखि पड़ैत अछि। प्राभामे खट्वा मे ख उदात्त थिक तेँ मैथिलीमे खाटा नहि भ' खाट भेल, जङ्घा सँ जाँघा नहि भ' जाँघ भेल। एकर विपरीत कीट शब्दमे ट उदात्त थिक, तेँ ओहिसँ कीड़ नहि भ' कीड़ा भेल।

एहि तरहेँ आघातबाला स्वरक गुरु होयब मैथिलीमे आयल आ' सम्भवत: तकर परिणामस्वरूप मात्रात्मक आघात चलय लागल। रागात्मक आघात (pitch accent) तँ मभा-कालहिमे समाप्त भ' चुकल छल।

मैथिलीमे ई मात्रात्मक आघात सदा प्रत्येक शब्द पर एके ठाम पड़ैत अछि आओर एक शब्दक आघातसँ दोसर शब्द प्रभावित नहि होइत अछि। जाहि ठाम आघात पड़ैत अछि से सामान्यत: गुरु भ' जाइत अछि आ' ताहिसँ पूर्व ओहि शब्दक सभ स्वर लघु।

मैथिलीमे मूल शब्दमे अधिकतम चारि अक्षर रहैत अछि ताहिमे आघात आदिसँ पहिल, दोसर वा तेसर पर पड़ैत अछि। उदाहरण देखल जाय :

औ सभ आब अपन छाड़ल पुरान कपड़ा अगहन मे पहिरत

एहिसँ प्रकट होयत जे एक अक्षर आ' दू अक्षर बाला शब्दमे आघात आदि अक्षर पर पड़ैत अछि, तीन अक्षर रहने पहिल, दोसर वा तेसर पर, तथा चारि अक्षर रहने तेसर पर। इहो प्रकट होयत जे अभिरचनामे जयत गुरु स्वर छैक ततय आघात ओही स्वर

पर पड़ैत अछि, परन्तु जतय आघातयोग्य स्थानमे लघु स्वर छैक ततय एहि आघा
ओहि स्वरक रैखिक प्रतीक तँ नहि बदलत, किन्तु उच्चारण प्रलम्बित भ' जाय
जेना सऽभ; अपऽन; अगहऽन; दिऽन; गुऽन। एहिना आघात पड़ने गुरु स्वरक
उच्चारण किछु आओर प्रलम्बित भ' जाइत अछि, जेना तमाऽसा (एतए पहिल आ
दोसर आ सँ केनेक पैघ अछि। तेँ ई नहि बूझल जाय जे आघातक कारणेँ लघु स्व
गुरु भ' जाइत अछि। वस्तुत: आघातसँ ओकर प्रलम्बता बढ़ैत अछि; प्रलम्बताक
फलस्वरूप गुरु स्वर गुरुतर उच्चरित होइत अछि आ' लघुस्वर गुरु। हँ, आघात-स्थलमे
पूर्व गुरु स्वरक लघु होयब एहि आघातक परिणाम मानल जा सकैत अछि। आ' इहए
थिक मात्रा सन्तुलन नियमक मूल।

ई आघात अधिकतर अन्तसँ दोसर अक्षर पर पड़ैत अछि। तेँ मैथिलीक
अधिकतर स्वर ह्रस्वान्त अछि, भनहि ओकार मूल दीर्घान्त शब्द रहल हो। यथा

मूल	पानीय	भल्लूक	कण्ट	दोलिका	कुमारी
हिन्दी	पानी	भालू	काँटा	डोरी	कुमारी
मैथिली	पानि	भालु	काँट	डोरि	कुमारि

केहन शब्दमे ई आघात कत' पड़त तकर नियम एहि तरहेँ निरूपित कयल जाय
सकैत अछि :।

(क) जँ गुरु स्वर हो तँ आघात ओहीपर पड़त, आ' जँ दूटा गुरुस्वर हो तँ पहिल
पर। यथा, बासन, बथान, टो/का।

(ख) जँ गुरु स्वर नहि हो तँ अन्तसँ दोसर अक्षर पर। यथा घर, तखन, अगहन।

(ग) तीनसँ अधिक अक्षरवाला शब्दमे ई आघात दू ठाम पड़ैत अछि, पहिल ठाम
मन्द आ' दोसर ठाम स्वाभाविक। यथा, कहेलथिन्ह, करतोह, जमिनदरि। एहन ठाम
पहिल आघातकेँ बलाघात मानब समीचीन होयत, किएक तँ एहिमे मात्रा (प्रलम्बता)
नहि बढ़ैत अछि।

रामावतार यादव मैथिलीमे मात्रात्मक आघात नहि मानैत छथि। हुनका मतेँ दुर्बल
स्थानमे गुरु स्वरक लघु होयब आघातजन्य नहि, शुद्ध मात्रा सन्तुलन जन्य थिक।
घऽर, दिऽन एहन ठाम लघु स्वरक प्रलम्बता हिनका मतेँ एक प्रकारक अनुतान
(intonation) थिक।

(2) बलात्मक आघात (Stress Accent)

शब्दमे कोना स्वनभक्तिक उच्चारण किछु अधिक आयास वा कठोरताक संग कयल जाइत अछि तँ कोनो स्वनभक्तिक कोमलताक संग। उच्चारणमे ई कठोरता भाषाशास्त्रमे बलाघात कहबैत अछि। ई बलाघात अङरेजीमे जतेक प्रमुख अछि ततेक मैथिलीमे नहि। अङरेजीमे बलाघातक स्थान बदलने शब्दवर्ग बदलि जाइत अछि जेना noun सँ verb भ' जायब। परन्तु मैथिलीमे एहि प्रकारक कोनो अन्तर नहि देखल जाइत अछि। ई आघात सामान्यत: ओही ठाम पड़ैत अछि जाहि ठाम बलात्मक आघात, परन्तु एहि आघातसँ स्वर प्रलम्बित नहि होइत अछि।

ई बलाघात सामान्यत: कत' पड़ैत अछि से देखल जाय।

(क) एक आ' दू स्वनभक्ति बाला शब्दमे पहिल स्वनभक्ति पर, जेना तोँ, के, घर, बाट, बेटा, तमासा, देखब, पायब।

(ख) दू स्वनभक्ति बाला शब्दमे जँ द्वितीय स्वनभक्ति गुरु (भारी) हो तँ द्वितीय पर पड़त, जेना करताह, कुम्हार, मोचण्ड, मजूर।

(ग) तीन स्वनभक्ति बाला शब्दमे बिचला स्वनभक्ति पर, जेना बटगबनी, सहुआइनि, पँचमहला।

(घ) चारि स्वनभक्ति बाला शब्दमे अन्तसँ तेसर पर, जेना नबतुरिआ, बहुरुपिआ।

(3) अवधारक आघात

मैथिलीमे एक आओर प्रकारक बलाघात अछि जे आन भाषामे कदाचिते भेटत। एहिमे शब्दक कोनो एक व्यंजनक उच्चारण द्विगुण बलेँ कयल जाइत अछि। लेखमे से प्रकट करबाक हेतु व्यंजन दोहरा देल जाइत अछि। ई विस्मय आ' अतिशयता द्योतित करैत अछि, विशेषत: विशेषणहिमे देखल जाइत अछि, आ' ततहु सीमिते शब्दमे। यथा

ई पेटू छथि, हिनका एतेक नहि, **एत्तेक** दिऔन।
चोराओल वस्तु कतहु भेटए, **कत्तहु** नहि भेटल।
एकरा छोट नहि बूझू, ई **बड्ड** पैघ घटना थिक।
करैत-करैत अकछा गेलहुँ जानि नहि **कक्खन** खतम होयत।
जाह, खीसा **खत्तम्**!

एकरा अवधारक आघात (emphatic accent) कहि सकैत छी, किएक एहिसँ तीव्रता अवधारित होइत अछि।

किछु एहनो द्वित्व अछि जे बलाघातजन्य नहि, उच्चारणक एक नब प्रवृत्तिसँ उद्‌भूत थिक। मैथिलीक सामान्य स्वननियमक अनुसार द्वित्व वर्जित अछि। मभामे

जे-जे छल से पूर्वस्वरकेँ गुरु बना' एकल भ' गेल, जेना भक्त > भत्त > पात; प
> पत्त > पात। पछाति कोनो-कोनो शब्दमे मधाक अवस्था टिकि गेल वा पुनर्नि
भ' गेल। फलतः किछु शब्दमे पुरना द्वित्वबाला रूप सेहो चलैत अछि, एकल व्यं
बाला सेहो। यथा,

पट्टा < पाटा < पाट < पट्ट; बच्चा < बाचा < बच्चा < वत्स; कप्पा < कापा <
कप्पा < कर्प; हत्ता < हाता।

लगैत अछि पूर्वक गुरु स्वरकेँ लघु क' अगिला व्यंजनकेँ दोहरायब एक सामान्य स्वनात्मक प्रवृत्ति भ' गेल, जेना, जूता : जुत्ता, छाता : छत्ता, खूटा : खुट्टा, बाटा : बट्टा, भीठ : भिट्ठा, पाता : पत्ता।

§ 19. मात्रा-सन्तुलन (rule of short antepenultimate)

मात्रा-सन्तुलन मैथिलीक एक परम व्यापक आ' महत्वपूर्ण स्वनिक नियम थिक। एहि नियमक अनुसार, मैथिली शब्दमे गुरुस्वर अन्तसँ चारि मात्राक भितरे रहि सकैत अछि, आओर ओहि गुरु स्वरसँ पूर्व सकल स्वर लघु भ' जाइत अछि। यथा

कमरसारि (।।।S।)	अगर/जानी (।।।SS)
एक/सरुआ (।।।।S)	कन/पातर (।।S।।)

आओर उदाहरण सारिणी 4 मे 21 सँ 29 तक देखू।

एहि नियमक तुलना तराजूसँ क' सकैत छी। अगिला पल्ला पर भार पड़ितहिँ पछिला पल्ला ओहिसँ हलुक भ' उपर उठि जायत, तहिना आगाँ गुरु स्वर अबितहि पाछाँक सभ स्वर हलुक (लघु) भ' जाइत अछि। यथा,

बात, बताह, बतहा, बतहबा

बात मे आघात बा पर अछि; ओ आघात जखन ता पर चल गेल तखन बा लघु (ब) भ' गेल; जेखन हा पर गेल तखन ता सेहो लघु (त) भ' गेल; आओर जखन अन्तिम बा पर पड़ल तखन हा सेहो लघु भ' गेल। एही दृष्टिएँ एकरा हम मात्रा सन्तुलन नियम कहैत छी।

एहि नियमक प्रथम द्रष्टा भाषाविद् होएर्नले आ' ग्रिअर्सन साहेब एकरा उपान्त्यपूर्व-लघुता- नियम (Rule of short antepenultimate) संज्ञा देलनि। ई परिभाषा स्वनभक्ति (syllable) पर आश्रित अछि। एहि नियमक अनुसार गुरु स्वर की तँ अन्त्य मे; ताहिसँ पूर्व नहि। अर्थात् गुरु स्वर अन्तसँ पहिल आ' दोसर स्वनभक्तिमे रहि सकैत अछि, ताहिसँ पूर्व कतहु नहि। एहिसँ पूर्व व्याकरण-प्रक्रियामे जे कोनो गुरु स्वर आओत से लघु भ' जायत।

एहि मात्रा-सन्तुलन नियमक सदृश प्राभासे सेहो एक नियम अछि जे शेषनिघात कहबैत अछि। एहि नियमक अनुसार शब्दमे कोनो एक स्वर उदात्त (आरोही) भेला पर आन सभ स्वर अनुदात्त (अवरोही) भ' जाइत अछि। एकर अनुकरण पर मैथिलीक उक्त नियमकें शेष-लघुता-नियम सेहो कहि सकैत छी।

एहि मात्रा-सन्तुलन नियमक अपवाद भारी संख्यामे क्रियापद-रूपावलीमे पाओल जाइत अछि। ई अपवाद दू प्रकारक अछि:

(क) एहन धातु जे मूलतः आ अथवा व्यंजन + आ सँ आरम्भ होइत अछि। एहि सभमे आ कोनहु अवस्थामे लघु नहि होइत अछि। यथा

मान—मानैत छी, मानल, मानलहुँ, माननिहार।

चाह—चाहैत छी, चाहल, चाहलहुँ, चाहनिहार।

छाड़—छाड़ैत छी, छाड़ल, छाड़लहुँ, छाड़निहार।

एकर विपरीत -

गन—गनैत छी, गनल, गनलहुँ।

अन—अनैतछी, आनल, अनलहुँ।

(ख) प्रेरणार्थक आ कतहु लघु नहि होइत अछि। यथा

गर—गरैत अछि, किन्तु गारैल छी, गारल, गारलहुँ।

मर—मरैत अछि, किन्तु मारैल छी, मारल, मारलहुँ।

पजर—पजरैत अछि, किन्तु पजारैत छी, पजारलहुँ।

(ग) किछु धातु जे बीचमे आ स्वर बाला अछि ताहिमे आ कतहु लघु नहि होइत अछि। यथा

नेआर—नेआरैत छी, नेआरल, नेआरलहुँ।

अखार—अखारैत छी, अखारल, अखारलहुँ।

विचार—बिचारैत छी, बिचारलहुँ।

§ 20. रूपस्वनिमिक विकार (morphophonemic alternation)

कोनो रचनांग लगलापर प्रकृतिभागमे भेनिहार स्वन-परिवर्त्तन भाषाशास्त्रमे रूप स्वनिमिक विकार (morphophonemic alternation) कहबैत अछि। एहन विकार प्राभामे सभसँ बेसी पाओल जाइत अछि, अङरेजीमे सभसँ कम, जेना प्राभा अनु + वद् + अक-अनुवादक (व केर स्थानमे वा); दिन + इक - दैनिक (इ केर स्थानमे ऐ तथा न मे अ केर लोप)।

मैथिलीमे रूपस्वनिमिक विकार बहुत अधिक अछि। किछुकेँ छाड़ि प्राय: प्र
सभ विकार दुइए प्रकारक अछि: (क) प्रत्ययक आदिमे स्वर रहलापर प्रकृतिभागक
अन्तिम अ स्वरक लोप तथा (ख) प्रकृतिभागक गुरु स्वर सभक लघु होयब। जेना
बात + आह - बताह, एतय त केर अ लुप्त भेल आ' बा केर आ लघु भ' अ भ
गेल। प्रथम प्रकारक विकारकेँ संस्कृत व्याकरणक भाषामे एकादेश सन्धि। (दू
स्वर मिलि एक स्वर होयब) कहि सकैत छी, जेना देखल + ए = देखले; हाथ
+ एँ = हाथेँ। द्वितीय प्रकारक विकार मात्रा-सन्तुलन शीर्षकसँ पूर्वहि देखा चुकल
छी (देखू § 19)।

सर्वनाममे आ' समासमे एहि प्रकारक विकार किछु अधिक देखल जाइत अछि।

रूपस्वनिमिक विकार एहि पुस्तकमे विभिन्न प्रकरणमे यथास्थान देखाओल
जायत। एतय एकर अभिलक्षण मात्र देखाओल अछि।

§ 21. स्वर-अवदमन (Schwa deletion)

विकारक एक आओर प्रभेद अछि जे भाषाशास्त्रमे schwa deletion कहबैत अछि। मैथिलीमे एकरा स्वर-अवदमन कहब समीचीन होयत, किएक तँ एहिमे कोनो दुर्बल स्वर अवस्थितिवश ततेक दबि जाइत अछि जे बजबामे कदाचिते सुनि पड़त, भनहि लेखमे टिकल रहय। किछु उदाहरण नागरी आ' रोमन दूनू लिपिमे देखल जाय। (नागरी लिपिमे अ स्वर व्यंजनमे नुकायल रहैत अछि, रोमन लिपिमे स्पष्ट देखि पड़ैत अछि; तेँ दूनू लिपिमे देखायब)।

मूल स्वरूप	**विकारजन्य स्वरूप**
(क) हमर घर Hamara ghara	हम्रा घरमे Hamra ghar me
(ख) चलल Chalala	चल्लाह Challah
(ग) ठनक Thanaka	ठन्का Thanka

तीनूमे मूल रूपमे जे हम (hama), चल (chala) तथा ठन (thana) छल से एहि विकारक फलस्वरूप हलन्त हम्, चल् तथा ठन् भ' गेल।

ई स्वर-अवदमन कोन-कोन परिस्थितिमे होइत अछि तकर सूक्ष्म विवेचन एतय अनावश्यक विस्तार होयत। मोटा-मोटी एतबे बूझल जाय जे रचनांग जुटला पर शब्दमे स्वनभक्तिक सीमा (sylable limits) बदलैत अछि, ताहिसँ कोनो स्वर स्वनभक्तिक अन्तमे दुर्बल स्थानमे पड़ि परम लघु भ' दबि जाइत अछि आ' अन्तत: अलक्षित भ' जाइत अछि। जेना सीमान्तरित स्वनभक्ति हम्-रा। तेँ एतय हम स्वनभक्ति अन्तमे पड़ने हम् (व्यंजनान्त) भ' गेल।

■

शब्द-विवेचन

§ 22. शब्द केर पारिभाषिक अर्थ

स्वन-विवेचनक उपरान्त स्वनसँ बनल शब्दक विवेचन कयल जाय। सामान्य व्यवहारमे शब्द थिक वाक्यक एहन घटक जाहिमे अर्थ हो तथा जकर उच्चारण बीचमे बिनु विराम लेने कयल जाय। परन्तु एहि प्रकरणमे एहिसँ अभिप्रेत अछि केवल संज्ञा आ' विशेषण जाहिमे विभक्ति वा कारकचिह्न नहि लागल हो। पाणिनि-परम्परामे ई प्रातिपदिक (nominal base) कहबैत अछि, आ' यास्कक परम्परामे नाम। प्रकारान्तरेँ कहि सकैत छी जे शब्दक दू स्वरूप अछि, मुक्त (विभक्तिरहित) आ' अन्वित (विभक्तियुक्त)। गाछक पात खसल एहिमे गाछ थिक मुक्त रूप आओर गाछक थिक अन्वित रूप। मुक्त रूप अभिधान (नाम) कहबैत अछि आ' अन्वित रूप पद। शब्दक इएह मुक्त रूप शब्दकोशमे संकलित रहैत अछि। परन्तु क्रियापदक मुक्त रूप नहि, मूल रूप होइत अछि, जे धातु कहबैत अछि। तेँ शब्दकोशमे धातुक प्रविष्टि क्रियावाचक संज्ञा बनाय कयल जाइत अछि, जेना लिख-नहि, लिखब भेटत।

§ 23. शब्दक स्वनिक घटक

शब्दमे पृथक् उच्चारणयोग्य घटक दू प्रकारक अछि। पहिल स्वतन्त्र एकल स्वर, जेना अ, आ, इ इत्यादि आ' दोसर व्यंजनयुक्त स्वर, जेना क, का, कि इत्यादि। ज्ञातव्य जे व्यंजनक उच्चारण बिनु स्वरक सहयोगेँ नहि भ' सकैत अछि। ई दूनू प्रकारक घटक वर्ण कहबैत अछि। कोनो-कोनो शब्दमे दू-दू वा तीन-तीन वर्णक उच्चारण एक संग एक आघातमे होइत अछि, जेना कटहर; चहटगर। तदनुसार शब्दक जे स्वनसमूह एक आघात (झटका) मे उच्चरित होइत अछि से अङरेजीमे syllable कहबैत अछि। एहि पुस्तकमे एहि हेतु स्वनभक्ति शब्द रखल गेल अछि। ई विभाजन उदाहरणसँ स्पष्ट होयत :

शब्द	स्वन	वर्ण	स्वनभक्ति
कटहर	क् अ ट् अ ह् अ र् अ (8)	क ट ह र (4)	कट् हर (2)
खंजन	ख् अ न् ज् अ न् अ (7)	ख ञ्ज न (3)	खन् जन (2)
मित्र	म् इ त् र् अ (5)	मि त्र (2)	मित् र (2)

द्वितीय उदाहरणसँ ई लक्षित होयत जे स्वनभक्तिमे संयुक्त व्यंजनक पहिल स्वर पूर्ववर्ती स्वरक संग उच्चरित होइत अछि, तेँ खन् एक स्वनभक्ति भेल, जन् दोसर। अक्षर (रैखिक प्रतीक) केँ देखी तँ वक्ता एकर विभाजन होयत व क्ता, किन्तु (व्याकरण वा भाषाक विवेचनमे) रैखिक प्रतीकक आधार पर कयल एंहन विभाजन कोनो काजक नहि। हँ, वर्ण आ' स्वनभक्ति आगाँ काज आओत।

24. शब्दक मूलानुसार वर्गीकरण

मैथिलीमे सत्तरि-अस्सी प्रतिशत शब्द प्राभासँ आयल अछि। प्राभामे दैनिक व्यवहार सम्बन्धी बहुत रास शब्द भारोपीय मूलक थिक। जेना आगि, पानि, खाएब, पीअब, उठब, बैसब, सर्वनाम, संख्यावाचक बन्धुत्ववाचक इत्यादि। परन्तु किछु शब्द एहनो अछि जे भारोपीयमे तँ खूब प्रचलित अछि, किन्तु मैथिलीमे नहि पाओल जाइत अछि। यथा

भारो	दम	नक्त	शर्करा	श्वन्	उदन्	जानु
अंग्रेजी	dome	night	sugar	hound	water	knee
जर्मन	dom	nacht	gucker	hmt	wasser	knie
रूसी	दोम	नोच	साखर	–	वदा	–
मैथिली	घर	राति	चीनी	कुकुर	पानि	ठेहु

अत: मैथिली शब्दक मूलान्वेषण आ' विकासक्रमक अध्ययनक मुख्य स्रोत प्राभा होयत, भारो नहि। परन्तु मैथिलीमे आनो अनेक स्रोतसँ शब्द आयल अछि। अत: स्रोतानुसार मैथिलीक शब्द तीन प्रकारक अछि–प्राभामूलक, देशी वा अज्ञातमूलक तथा विदेशी। तीनू प्रकारक विवेचन फूट-फूट कयल जायत। कोनो भाषामे बाहरसँ जे शब्द अबैत अछि तकर स्वनतान्त्रिक संस्कार वा अनुकूलन होइत रहैत अछि। एहि अनुकूलन प्रक्रियाक सविस्तार विवेचन आगाँ कयल जायत। एतय मोटामोटी आदान-क्रम द्रष्टव्य।

25. प्राभामूलक शब्द

प्राभा मानू मैथिलीक अपन पुरखाक देल खजाना थिक। एकरे शब्द-सम्पदा पर मैथिली जिबैत अछि। तेँ कहि सकैत छी जे मैथिलीमे प्राभाक कोनो टा शब्द अग्राह्य नहि। एही शब्द-सम्पदाक बलेँ मैथिली समृद्ध होइत रहल अछि।

§ 26. देशी शब्द

संस्कृत आओर संस्कृतमूलक शब्द सम्पूर्ण आर्यावर्तमे प्रसिद्ध मानल जाइत छल। पछाति प्राकृत आ' अपभ्रंश भाषामे किछु शब्द एहन पाओल गेल जे आर्यावर्तक कोनो-ने-कोनो क्षेत्रविशेष धरि प्रचलित छल। प्राकृत व्याकरणमे एहि प्रकारक शब्द देशज व देशी (क्षेत्रीय, नेटिभ) कहल गेल अछि। आजुक भाषाशास्त्री लोकनिक अनुसार एहन शब्द आर्यावर्तक मूल निवासी आर्येतर जनगणक विभिन्न भाषासँ आयल होयत। एक तँ ई आदान ततेक दूर अतीतमे भेल होयत जे आतेय पहुँचब कठिन। दोसर, एतय ओ भाषासभ लुप्त भ' गेल, तखन अनुसन्धान हो कोना। तेसर, जँ कतहु कात-करोटमे जिबितहुँ अछि तँ जा' ओहि भाषासभक संग मैथिलीक गहन तुलनात्मक अध्ययन नहि भेल अछि ता' दुइ-चारि उदाहरणहिसँ सन्तोष करय पड़त। यथा,

कूरी- ई मुंडा भाषाक शब्द थिक। ओहिमे एकर अर्थ थिक बीसक समूह। परन्तु मैथिलीमे एकर अर्थ थिक फूट-फूट क' लगाओल ढेर वा पुंज।

पन- साठिक समूह। ई केराक गणनामे चलैत अछि।

टाङ- ई चरणदण्ड अर्थमे अनेक नभामे प्रचलित अछि। ई ऑस्ट्रिक कुलक मोन-ख्मेर भाषासँ आयल प्रतीत होइत अछि। देखू अगिला शब्द।

खुट्टा- खशकुरा (नेपाली) भाषामे एकर अर्थ थिक टाङ। की चमत्कार! दूनूक आकार तँ मिलितहिँ अछि, व्युत्पत्ति सेहो खूब मिलैत अछि। मोन-ख्मेर भाषामे कु एक उपसर्ग थिक; तकरा टाङ शब्दमे जोड़ू तँ होएत कु + टाङ > कुटाङ > खुटाङ > खूटा > खुट्टा। इएह टाङ शब्द डाङ, ढेङ, ठेङा एहू शब्दसभक मूल भ' सकैत अछि।

गोरु- सुनीति बाबू एक ठाम एकर उद्‌भव संस्कृत गोरूप सँ कहलनि अछि, किन्तु दोसर ठाम संस्कृत गो-"गाए" तथा कोल उरि "पशु" केर संयोगसँ बनल कहलनि अछि।

राड़- ई कोल जनगणक एक गोत्र वा वंशक नाम छल, जे मैथिलीमे एक जाति-समूहक नाम भ' गेल अछि, जेना शूद्र।

चुहार- इहो कोल जनगणक एक ज़ाति (गोत्र)क नाम छल जे मैथिलीमे विशेषण भ' चोर अर्थमे चलैत अछि।

चाइँ- इहो कोल जनगणक एक जातिक नाम थिक। ई जाति एखनहु एहि नामेँ विद्यमान अछि। मैथिलीमे एकर अर्थ (वा दोसर अर्थ) उचक्कन भ' गेल अछि।

उपर्युक्त उदाहरण मैथिलीसँ देल अछि। परन्तु एहि प्रकारक बहुतो शब्द, जकर मूल आर्यभाषामे नहि भेटैत अछि, प्राय: सभ नभामे यत्र-तत्र दूर-दूर तक पसरल अछि। यथा, पेट, बेटा, बाप, लोटा, लूँगा (मैं. नूआ, नेपाली लुग्गा, पंजाबी लहंगा), छोट, मोट, बड़ इत्यादि।

एहन शब्द अन्य नभाक अपेक्षा मैथिलीमे (आ' अन्य प्राच्यवर्गमे) अधिक होयत, कारण जे प्राच्यदेशमे आर्यजनक प्रसार उत्तर कालमे भेल जा धरि आर्येतर जनगणक भाषा एहि क्षेत्रमे पूर्णत: लुप्त नहि भेल छल होयत।

द्रविड़ कुलक भाषासभँ जे शब्द सभ आयल अछि सेहो देशी मानल जाइत अछि। परन्तु ई आदान अधिकतर प्राभाकालहिमे भेल। तेँ एहन शब्द जे मैथिलीमे चलैत अछि से अज्ञानवश वा व्यवहारत: देशी नहि, संस्कृतमूलक बूझल जाइत अछि। यथा कड़ू < कटुक; कमार < कर्मार; कुटी, फड़ < फल इत्यादि।

द्रविड़ भाषाक प्रभाव शब्दावलिए धरि सीमित नहि अछि; ताहूसँ बेसी प्रभाव अछि मैथिलीक (वा सकल नभाक) वाक्य-रचना पर (96)।

§ 27. विदेशी शब्द

बहुत प्राचीन कालहिसँ देशान्तर लोक भारत अबैत रहल आ' तकर भाषाक प्रभाव मैथिली सहित सभ भारतीय आर्यभाषा पर पड़ैत रहल। एहि क्रममे जे शब्द सभ नभामे घोसिआयल से विदेशी कहबैत अछि। आजुक मैथिलीमे सभसँ अधिक विदेशी शब्द फारसीक आ' अङरेजीक आयल अछि। मिथिला तेरहम शतकहिसँ मुसलमानक शासनमे रहल। मुसलमान एतय आबि-आबि बसैत गेल तथा एहि ठामक लोक मुसलमान बनैत गेल। फलस्वरूप तुर्की, अरबी आ' फारसी भाषाक बहुत-रास शब्द मैथिलीमे समाइत गेल। सोलहम शतकसँ पोर्तुगाली, डच, फ्रेंच आ' अङरेज भारत आबि-आबि अपन प्रभुत्व जमबय लागल आओर अन्तत: अङरेज अखिल भारतक शासन भ' गेल। फलत: मैथिलीमे यूरोपीय भाषासभक सेहो बहुतो शब्द आयल। अङरेजी तँ उत्तरोत्तर अपन टाङ पसारनहि जाय रहल अछि।

विदेशी शब्द सभ भिन्न-भिन्न प्रयोगक्षेत्रमे पायर रोपलक। मुख्य क्षेत्र अछि प्रशासन, राजस्व, न्याय, रक्षा, युद्ध, राजसी ठाठ, सामन्तीय शिष्टाचार, धर्म आदि। दैनन्दिन जीवन आ' लोकाचारक क्षेत्रमे विदेशी शब्द मिथिलामे केवल मुसलमान बीच चलल। फारसीक अधिकतर शब्द मैथिलीक शब्दकेँ मारि-मारि अपन जगह बनओलक, परन्तु यूरोपीय शब्द अधिकतर खाली जगहकेँ भरलक, जेना नब-नब आविष्कार, नब-नब ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार आदि। अधिक उदाहरण देब अनावश्यक विस्तार होयत। विभिन्न प्रयोगक्षेत्रक किछु विदेशी शब्द देखल जाय :

(I) फारसी शब्द (तुर्की-अरबी-सहित)

राजस्व सम्बन्धी-कास्त, किता, खसरा, खाता, पोत, मालगुजारी, दखल, कब्जा, लाखराज, रैअत, हक, जमीन, रकबा, आबाद, असामी, दाखिल, खारिज, जमाबन्दी, बन्दोबस्त ।

प्रशासन सम्बन्धी-अदालति, फैसला, मोकदमा, मामला, फौजदारी, मुद्दै, मुद्दालह, गबाह, ओकील, मुखतार, कानून, आइन, अरजी, तहसील, दरोगा, अमला, हाकिम, नाजिर, कातिब, दस्ताबेज, सबूत, तहकिआत, तसफिआ, मुनसिफ, मोहल्लति ।

दरबारी ठाठ- सलाम, हजूर, हाजिर, अहम, रोब, इज्जति, फरमान, बखसीस, अरजी, दरबार ।

विलास वस्तु- अएना, अतर, किमखाप, मखमल, चसमा, चपकन, चीक, तकेआ, तोशक, दलान, परदा, बाग, महल, शेरवानी ।

धार्मिक- इमान, महजित, रोजा, कसम, मोहर्रम, ईद, नमाज ।

सुनीति बाबूक आकलनक अनुसार बङलामे करीब 2500 फारसी-अरबी शब्द होयत । एकर संख्या मैथिलीमे निःसन्देह एहिसँ बहुत कम होयत, कारण जे मैथिल समाज मुसलमानक शासनाधीन रहितहुँ स्वभावतः संरक्षाशील होयबाक कारण विधर्मी शासकवर्गसँ बहुत दूर रहल तथा ओइनिबार-वंशक राज्यकाल धरि बहुत अंशमे स्वशासित रहल । तथापि विद्यापतिक कालहुमे राजस्व प्रशासन पर तुर्क, अफगान आ' मुगल सभक नियन्त्रण रहबाक कारणेँ कर-कचहरी सम्बन्धी बहुत रास फारसी शब्द एतय प्रचलित भ' चुकल छल । प्रमाण स्वरूप विद्यापतिक लिखनाबली जे संस्कृतमे लिखल अछि ताहूमे ओजेह दाम, बाकी दाम, हाल देय, पोत, पैकार इत्यादि शब्द पाओल जाइत अछि । एहन किछु शब्दक संस्कृतीकरण सेहो देखल जाइत अछि, जेना सुरत्राण (सुल्तान), चातुर्धरिक (चौधरी), पोत्रक (पोत) ।

सम्भवतः मैथिलीकेँ राजभाषा बनबाक सौभाग्य कहिओ नहि भेलैक । तथापि खण्डवला-कुलक शासनकालक किछु अर्धसरकारी पत्र आ' छोट-छोट सनदमे जे मैथिलीक प्रयोग भेटैत अछि ताहिमे अस्सी प्रतिशतक लगभग फारसी शब्द अछि, तहिना जेना उर्दूमे । प्रतीत होइत अछि जे सतरहम शतक अबैत-अबैत फारसी शब्द मैथिली साहित्यमे 'ग्राह्य' बूझल जाय लागल । रत्नपाणि (1833-1853) उषाहरण नाटिका मे एहन नओ शब्दक प्रयोग कयल अछि-जंग, फौज, तैयारी, जोर, शोर, हुकुम, दिमान, रंज, तरह । चन्दा झाक रामायण आ' भजन सभमे विदेशी शब्दक प्रयोग विरल अछि :

* जे **फकीर** से रहथि **फराक**।

* बसथि **बजार** मे पूजा काज।

* घंटा-घड़ी **जमातिक** ब्याज।

* मन तनमे **नबाब** बहुत अनीति करै के देत जबाब।

* अड्ड-बड्ड घोर **जोर** हुनक **हिसाब**।

हिनक एक भजन हिन्दीमे अछि, जाहिसँ प्रकट होइत अछि हिनका समयमे, दरबारमे फारसी शब्द कतेक पसरि गेल छल:

रटति श्रुति सुखमय श्री **दरबार**।
नाजिर अनल सकल ऋतुकारक पवन चतुर प्रतिहार
श्रीपति जहाँ **सिरिस्तेदार** हैं यम-से जहाँ **जमादार**
तहसिलदार तरल तारापति मघवा **मुनसि** विचार
मारतण्ड है महा **मुसद्दी** वरुण **वकील** उदार
द्रुहिण **दिमान** दयामय देखत दिव्य दृष्टि संसार
महादेवजी मुख्य **मोसाहेब** महामहिम आगार
महारानी श्रीदेवी पदनख 'चन्द्र' सकल दुख टार।

लगैत अछि जे मैथिली फारसी शब्दकेँ ग्रहण करबामे ओतेक उदार नहि अछि जतेक भोजपुरी आदि पश्चिमी भाषा। उदाहरण अछि :

भोजपुरी	-	मेहमान	सुबह	शाम	शरीफ	इनसान
मैथिली	-	पाहुन	परात	साँझ	भलमानुस	मनुख
भोजपुरी	-	अरमान	खातिर	किसमत	मजदूर	दौलत
मैथिली	-	मनोरथ	सत्कार	भाग	बोनिहार	धन

एहि प्रवृत्तिक विपरीत मैथिलीमे किछु एहनो फारसी शब्द भेटैत अछि जे उर्दुअहुमे कमे चलैत अछि। यथा

भोजपुरी	-	मुदा	कबुला	चिनबार	इसखी	खाहे
मैथिली	-	लेकिन	मनौती	चबूतरा	शौकीन	चाहे

फारसीक संग-संग किछु तुर्की भाषाक शब्द सेहो आयल अछि। जेना कैँची, काबू, खाँ, गलैचा, चाक, चीक, तबक, तुरुक, दरोगा, बबर्ची, बहादुर, बीबी, मुचलका, लास इत्यादि।

(2) फारसी शब्दक स्वन-अनुकूलन

जेना प्राभा (संस्कृत) सँ आयल शब्दक दू प्रभेद अछि तत्सम आ' तद्भव, तहिना विदेशी शब्दक ग्रहणमे सेहो देखल जाइत अछि। तद्भव रूप अनुकूलन-प्रक्रियासँ बनैत अछि। जेना, फारसी आ' अरबी एहि दूनू भाषाक जे स्वन मैथिलीमे नहि अछि तकरा स्थानमे तत्सदृश मैथिलीक स्वन चलैत अछि। यथा-

फारसी	-	जहर	करार	गरीब	फर्जी	शहर	शोर
मैथिली	-	जहर	करार	गरीब	फरजी	सहर	सोर

मात्रासन्तुलन/शेष-ह्रस्वता नियमक अनुसार अनुकूलनक उदाहरण अछि

फारसी	-	दारोगा	दीवाना	ईमान	बेईमान
मैथिली	-	दरोगा	दिमान	इमान	बैमान

एक विचित्र प्रकारक अनुकूलन अछि अन्तमे इ लगायब। यथा

फारसी -	फर्सत	नजर	कसर	खबर	सूरत	मदद	परवाह
मैथिली -	फुरसति	नजरि	कसरि	खबरि	सूरति	मद्दति	परबाहि

किछु गोटय तत्सम सेहो लिखैत छथि, जेना शहर, बेश, इशारा, वकील इत्यादि; किन्तु हिंदीक विपरीत मैथिलीमे अधोबिन्दु (नोख्ता) नहि चलैत अछि।

(3) यूरोपीय शब्द

(क) पोर्तुगाली शब्द–व्यापारी 16 म शतकमे बंगाल आयल। तहिआसँ पोर्तुगाली शब्द भारतीय भाषामे आबय लागल। मैथिलीमे एहन शब्द बहुत कम अछि। विशेष बात ई अछि जे अङरेजीमे टवर्ग अछि, पोर्तुगालीमे नहि। उदाहरण, बोतल, बुताम, दिसम्बर, सितम्बर, जङला, दसनिरी, तुरपीन, पतलून, मिस्तिरी, तौलिआ, कुरुस, साबुन इत्यादि। एहि मूलक लगभग सभ शब्द शिल्प ओ वाणिज्य सम्बन्धी थिक।

एहि मूलक सभ शब्द बहुत दिन पहिने आयल, तेँ एकर पूर्णतः अनुकूलन भ' गेल अछि। अङरेजी शब्दमे अनुकूलन बड़ कम भेल, कारण जे आधुनिक शिक्षा-तन्त्र द्वारा ओकर तत्सम उच्चारण सिखा देल गेलैक। पोर्तुगाली शब्द बङलामे बेसी अछि। जेना, तासक चारू पत्तीक नाम बङलामे क्रमशः हरतन, सझतन, इस्कावन आ' चिँड़ितन प्रचलित अछि वा छल। मैथिलीमे एहिसँ एकेटा इसकापन आयल, शेष तीनूक देशी नाम बना लेल गेल पनमा, चिड़आ, चौखुटी।

(ख) अङरेजी शब्द-भारतमे अङरेजी राज स्थापित होइतहिँ अङरेजी शब्द देश भरिक भाषामे आबय लागल। आरम्भमे दू प्रकारक शब्द आयल। पहिल प्रकार छल वैज्ञानिक आविष्कार सम्बन्धी शब्द। जेना रेल, बाइसकोप, मोटरगाड़ी, थरमामीटर, हरि-मुरिआ, बाइसकिल, डाकदर, इंजन, पम्प इत्यादि। दोसर प्रकार छल शासन

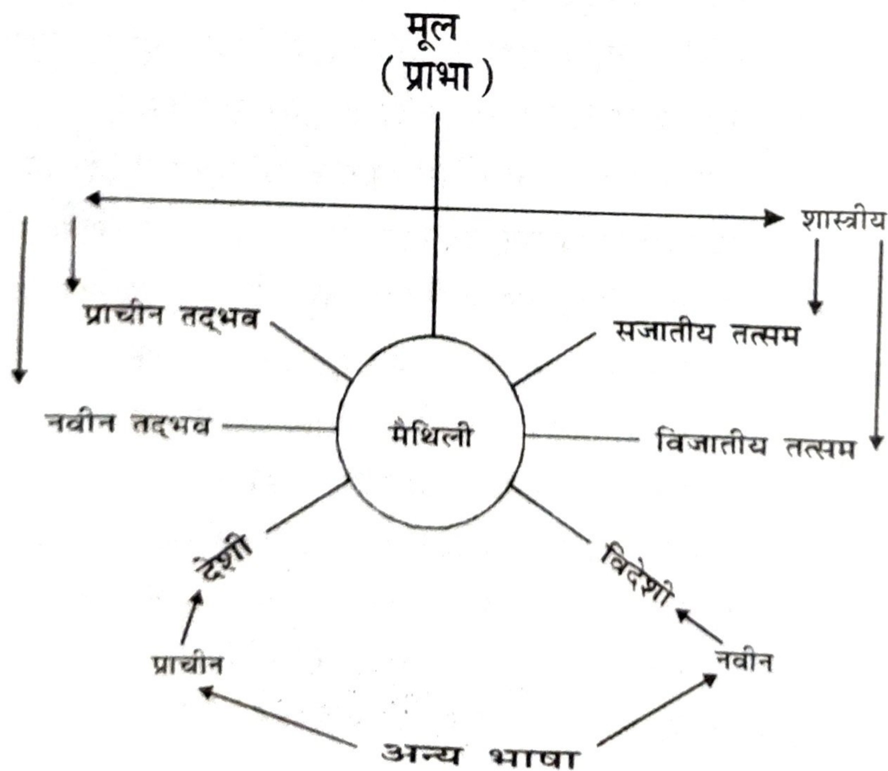
सम्बन्धी शब्द जेना पुलिस, गोअरमिंट, जज, निसपीटर, मजिस्टर, जेल, स... ओआरंट, रसीद, पोसकाट इत्यादि।

पहिने जे शब्द आयल से अनुकूलित होइत गेल जेना स्टेशन सँ टीसन, प्लैटफ... सँ पलेटफारम, स्कूल सँ इसकुल, ड्राइभर सँ डरेबर, टाइम सँ टेम, कोट सँ कोट श... कोरट, मैजिस्ट्रेट सँ मजिस्टर (कलक्टर क नकल पर)। परन्तु अनुकूलनक ई चे... वा प्रवृत्ति केवल अशिक्षित वर्गमे रहल। अङरेजी शिक्षाक प्रचारक फलस्वरूप शिक्षि... वर्ग एहि अनुकूलनकेँ अपन अज्ञताक सूचक बूझि यथासम्भव यथावत् उच्चारण कै... रहलाह। परिणाम स्वरूप अङरेजी शब्द शिक्षित वर्गमे तत्सम रूपमे चलल ... अशिक्षित वर्गमे तद्भव रूपमे, ओहिना जेना संस्कृत शब्द।

पछाति सभ प्रकारक अङरेजी शब्द भारी संख्यामे आबय लागल आओर आयातक प्रवाह उत्तरोत्तर तेजे भेल जा रहल अछि। पहिने ई आयात आवश्यकतानुसारी छल, पछाति अनावश्यको शब्दक अबाध आयात होअय लागल जकर मुख्य कारण छल एक खास प्रकारक मनोवृत्ति। एकरा संगहि अनुकूलन प्रक्रिया मानू बन्द भ' गेल। अङरेज जहिना उच्चारण करैत अछि तहिना उच्चारण करब विद्वत्ताक प्रतीक भ' गेल। एक रोचक उदाहरण छथि कालेजक अध्यापक लोकनि जे अपनाकेँ डाक्टर (वा डा.) नहि कहताह, डॉक्टर कहताह, भनहि आन सभ हुनका डाक्टर कहौन।

मैथिलीक शब्दभंडार कोन-कोन स्रोतसँ भरल अछि से एक झलकमे सारिणी-6 सँ स्पष्ट होयत।

सारिणी 6 : शब्दावलीक स्रोत



§ 28. विकासक्रमिक प्रकार

शब्दक स्वनिक स्वरूप कालक्रमेँ बदलैत रहैत अछि। प्राभामूलक शब्दमे स्वनिक परिवर्तन की-की, कोना-कोना भेल अछि तकर विवेचन पूर्वमे कल जाए चुकल। एतय देखल जाय जे एहि परिवर्तनक फलस्वरूप शब्दक कतेक प्रकार विकसित भेल अछि। भारतक प्राचीनतम भाषाशास्त्री यास्क स्वनिक विकासक दृष्टिएँ शब्दक तीन प्रकार कहल अछि :

(क) प्रत्यक्षवृत्ति– एहन शब्द जाहिमे स्वनविकार ततेक थोड़ भेल अछि जे ओकर मूल शब्दक पता अनायास लागि जाय। जेना काठ < काष्ठ; अकास < आकाश।

(ख) परोक्षवृत्ति–एहन शब्द जकर मूल किछु आयासेँ अवधारित हो। जेना खैहन < खाद्यधान्य, बसहा < वृषभ।

(ग) अतिपरोक्षवृत्ति–एहन शब्द जकर मूल अत्यधिक स्वनपरिवर्त्तनक कारणेँ बड़ बुद्धि लगओने अवधारित भ' सकैत अछि। जेना सूँड़ा < सुअउँड़अ < शुकतुण्डक "सूगाक ठोर सन ठोरबाला कीड़ा"; धोती < अधोवत्रिका; हेठ < अधस्थित।

किछु एही प्रकारक त्रिधा विभाजन प्राकृत व्याकरण सभमे कयल गेल– तत्सम, अर्धतत्सम आ तद्भव। ई विभाजन ततेक उपयोगी सिद्ध भेल जे संसारभरिक भाषाविज्ञान जगत्मे पसरि गेल आ' एही संग तत्सम आ तद्भव शब्दो एही रूपमे सभ भाषामे अपना लेल गेल। मैथिलीक शब्दावली जनबामे ई विभाजन अत्यावश्यक अछि, तेँ एकर सविस्तर विवेचन कयल जाय।

§ 29. तत्सम

आन देशमे प्राचीन भाषा मरैत गेल आ' तकर स्थान नवीन भाषासभ लैत गेल। एकर विपरीत भारतमे प्राभा (वैदिक आ' संस्कृत भाषा) मुइल नहि, किछु शिक्षित वर्गमे जीवित आ' समृद्ध होइत रहल। धर्मभाषा होयबाक कारणेँ तथा शिक्षित वर्गक प्रभावेँ संस्कृतसँ बहुतो शब्द मैथिलीमे अविकृत रूपमे निरन्तर अबैत रहल। एहन शब्द सभ तत्सम कहबैत अछि। तत् संस्कृतम् तेन समम् तत्समम्। अर्थात् जाहि शब्दक स्वनात्मक स्वरूप जेहने संस्कृतमे तेहने मैथिलीमे रहय से तत्सम कहबैत अछि।

सजातीय आ' विजातीय तत्सम–तत्सम दू प्रकारक अछि। पहिलमे स्वन-संरचना मैथिलीक अनुकूल रहैत अछि तँ दोसरेमे तकर प्रतिकूल। दूनू प्रकारक उदाहरण क्रमशः (क) आ' (ख) थिक :।

(क) जल, देह, दिन, मास, काल, पल, मेघ।

(ख) श्रेष्ठ, नेत्र, गोत्र, मृत्यु, ग्रन्थ, शास्त्र।

पहिलकेँ सजातीय तत्सम आ' दोसरकेँ विजातीय तत्सम कहि सकैत छी।

प्राचीन ग्रामैमे, किछु-किछु ममैमे सेहो, विजातीय तत्सम शब्दक प्रयोग वर्जित छैक किन्तु सजातीय तत्समो अत्यधिक नहि रहैत छल। उदाहरण देखल जाय :

अग्राह्य— नेत्र स्त्री ब्रह्मा स्वर्ण वस्त्र वृक्ष स्तन।

ग्राह्य— नयन नारी विधि कनक वसन तरु कुच।

ज्ञातव्य जे संस्कृतक सभटा शब्द मैथिलीमे ग्राह्य नहि मानल जाइत अछि। संस्कृतमे जल शब्दक पर्याय अछि अम्बु, अम्भस्, अर्ण, आपस्, उदक, कमल, कीलाल, क्षीर, घनरस, जल, नीर, पयस्, पानीय, वारि, सलिल इत्यादि। एहिमे केवल चारि शब्दक प्रयोग मैथिलीमे सामान्यतः पाओल जाइत अछि—जल, नीर, वारि आ' सलिल। आपस् (आप/अप) अन्यत्र परम व्यापक क्षेत्रमे अति प्राचीन कालमे प्रचलित रहितहुँ मैथिलीमे अग्राह्य अछि। एहि प्रकारक अग्राह्य तत्सम शब्दक प्रयोग मैथिलीमे उपहसनीय मानल जाइत अछि। किछु उदाहरण (लेखकक नाम गुप्त रखैत) नीचाँ देल जाइत अछि:

जान न **रमा-जानि** केर कृपया............

निर्द्वन्द्व **मच्चरण द्वन्द्वलयी** अनन्य............

सित अपने **अध्युषित** शिलापर बैसाओल **श्रुतिशाखि**............

उठबैत भेला नन्दहुकेँ **तूर्ण**............

अन्तश्चिन्ताक्रान्तस्वान्त भेल..........

गुरु **मन्दुरा**-संस्कार करएक व्याजेँ..........

से जनिक गीत श्रवणसँ **पानीयपान** त्यागि...........

तत्सम शब्दमे एक प्रकारक प्रतिष्ठा निहित छैक जे निम्नलिखित उदाहरणसँ स्पष्ट होयत:

गंगाक जल (गंगाक पानि नहि)। डबराक पानि (डबराक जल नहि)।

कखनहु तत्सम शब्दक अर्थ मैथिलीमे बदलि वा विचलित भय जाइत अछि। यथा चेतन "वयस्क"; आवेश "स्नेह"; उपहत "छूतल"; उपराग "उलहन"; प्रमाद "संकोच"; आगम "आभास"; एकान्ती "गुप्त वार्ता"; आस्था "परिचर्या"; लघुशंका "मूत्रत्याग"; चर्या "आचरण, करनी"; कुचेष्टा "निन्दा, उपहास"; निर्दिश "असहाय"; उपन्यास "वैवाहिक सम्बन्धक प्रस्ताव"; न्यास "नेआर, कार्यक्रम"; परंच "परन्तु"; प्रपन्न "प्रसन्न, सन्तुष्ट"; व्यतिरेक "विना"; वृत्त "उद्यत, प्रस्तुत, विद्यमान"; व्यवस्था "दहेज" इत्यादि।

§ 30. अर्धतत्सम

मैथिलीमे संस्कृतसँ नब-नब शब्द निरन्तर अबैत रहल। किछु दिन तँ एहन शब्द सभक अनुकूलन चलल, पछाति अविकल रूपहि गृहीत होइत गेल। परन्तु सामान्य व्यवहारमे तखनहु एहि नवागत शब्दसभक अनुकूलन किछु ने किछु होइत रहल। फलतः शिष्टजन तँ तत्सम उच्चारण करैत रहलाह, परन्तु जनसामान्य उच्चारण ओहिसँ कनेक-कनेक विचलित होइत रहल। यथा

शिष्टजन-	त्रयोदशी	सत्यनारायण	प्रसन्न	अन्नप्राशन
सामान्य जन-	तिरोदसी	सतनराएन	परसन	अनपरासन

एहि प्रकारक शब्द अर्धतत्सम कहबैत अछि।

§ 31. तद्भव

मूल वा बाह्य भाषासँ आयल शब्द जखन मैथिलीभाषीक जिह्वाक साँचपर चढ़ैत चढ़ैत स्वन-संरचनामे विशुद्ध मैथिलीक अनुरूप भ' जाइत अछि तखन ओ तद्भव (ताहि मूल वा बाह्य भाषासँ उद्भूत) कहबैत अछि। ध्वनिपरिवर्तनक सहज प्रवाहमे देश-काल-पात्रक अनुसार नब-नब स्वरूप ग्रहण करैत रहब शब्दहिक नहि, भाषाक सभ अंगक सहज स्वभाव थिक। एहि व्यापक अर्थमे सभ भाषा तद्भव थिक। परन्तु संकुचित आ' व्यावहारिक रूपमे शब्दे टा तद्भव कहबैत अछि।

वस्तुतः तद्भवे मैथिलीक अपन सम्पदा थिक। इएह सामान्य लोकव्यवहारमे अछि। केवल शिष्ट, शिक्षित आ' समृद्ध लोक प्रतिष्ठा-प्रदर्शनार्थ तत्समक प्रयोग अधिक करैत अछि। एहिसँ समाजमे द्विवाचिकता (dialossia) आयल अछि। तत्सम-प्रधान उच्च स्तरक भाषा आ' तद्भव-प्रधान निम्न स्तरक भाषा। उच्च स्तरक लोक कखनहु तद्भवकेँ तत्सम बनाय बजैत अछि, यथा

उच्च-	हस्त	मुख	ग्राम	पुत्र	भ्राता	प्रतिपत्	क्लेश
निम्न-	हाथ	मुह	गाम	पूत	भाय	पड़िब	कलेस

कखनहु तद्भवक तत्सम पर्यायवाचीक प्रयोग करैत अछि, यथा

उच्च-	जल	घट	जलपान	वृक्ष	मध्याह्न	आसन	
निम्न-	पानि	घैल	पानिपिआइ		गाछ	दोपहरि	बैसक

§ 31क. प्राचीन आ' नवीन तद्भव

देखि चुकलहुँ जे संस्कृत शब्द कोना विकसित होइत मैथिलीमे तद्भव रूपमे परिणत भेल। एहि क्रममे किछु शब्द संस्कृतसँ प्राकृत आओर ताहिसँ अपभ्रंश होइत मैथिलीमे आयल। एहन शब्द प्राचीन तद्भव कहबैत अछि। कालान्तरमे सोझे संस्कृत

सँ आओरो शब्द सभ अबैत गेल । एहन शब्द नवीन तद्भव कहबैत अछि । जे पहिने आयल ताहिमे किछु बेसी आ' भिन्न प्रकारक विकार (ध्वनि-परिवर्तन) भेल; जे पछाति आयल ताहिमे किछु कम । दूनूक विकास-क्रममे अन्तर देखल जाय ।

(क) प्राचीन तद्भव (प्रात.) मे संयुक्त व्यंजनमे एक व्यंजन लुप्त होइत अछि, किन्तु नवीन तद्भव (नत.) मे दूनू व्यंजनक बीचमे एक स्वर द' दूनू फुटा देल जाइत अछि । यथा

प्राभा.	रक्त	तप्त	कर्म	शब्द	शास्ति
प्रात.	रात	तात	काम	साद	साति
नत.	रकत	तपत	करम	सबद	सासति

(ख) प्रात. मे ऐ/औ के स्थान ए/ओ भेल, परन्तु नत. मे दूनू पूर्ववत् रहल । यथा

प्राभा.	तैल	मौक्तिक	पौत्र	कौशिक	गौरी
प्रात.	तेल	मोति	पोता	कोसी	गोरि
प्राभा.	चैत्र	दैत्य	वैशाख	यौवन	यौतुक
नत.	चैत	दैत	बैसाख	जौबन	जौतुक

(ग) प्राभाक ऋ प्रात. मे अ अथवा उ भेल, किन्तु नत. मे इ अथवा इरि । यथा-

प्राभा.	कृष्ण	वृश्च	धृष्ट	वृक्ष	तृप्त	पृथ्वी
नत.	किसुन	बीछ	ढीठ	बिरिछ	तिरपित	पिरथी

(घ) मूर्धन्य ष् प्रात. मे स् भ' गेल, नत. मे ख् । यथा

प्राभा.	दोष	विषम	विशेष	भूषण	ऋषि
प्रात.	दोस	बिसम	विसेस	भूसन	रिसि
नत.	दोख	बिखम	बिसेख	भूखन	रिखि

(ङ) प्राभा. क्ष् प्रात. मे ख् भेल, नत. मे छ् । यथा-

प्राभा.	पक्ष	क्षति	प्रत्यक्ष	लक्ष्मी	भिक्षा
प्रात.	पख	खति	परतेख	लखमी	भीख
नत.	पछ	छति	परतछ	लछमी	भिच्छा

(च) प्रात. मे स्वरमध्यवर्ती व्यंजन लुप्त भेल, परन्तु नत. मे लुप्त नहि भेल :

प्राभा.	सकल	वचन	पद्म	यमुना	काक
प्रात.	सयर	बयन	पउुम	जउुनि	काअ
नत.	सगर	बचन	पदुम	जमुनी	काग ।

ज्ञातव्य जे तत्सम शब्दक बाढ़िमे तद्‌भव शब्द भासल नहि, प्रात., नत., तत्सम, अर्धतत्सम चारू संग-संग चलैत रहल, जेना गाम, ग्राम, गराम ; पूत, पुत्र, पुतर; काम, कर्म, करम। शब्दक ई बहुरूपता भाषाकेँ द्विस्तरीय बना देलक-उच्च स्तर तत्समोन्मुख भ' गेल आ' निम्न स्तर तत्समविमुख। ई स्थिति भाषाशास्त्रमे द्विवाचिकता (डाइग्लोसिआ) कहबैत अछि।

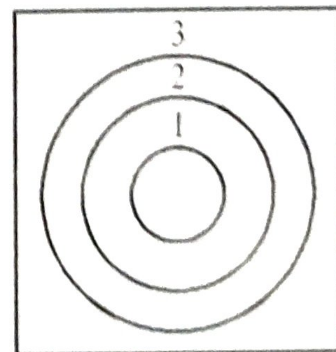
§ 32. शब्दक विस्तारी स्वरूप

मैथिलीमे लगभग सभ नामक (संज्ञा आ' विशेषणक) तीन वा दू स्वरूप पाओल जाइत अछि– लघु, गुरु आ' गुरुतम। यथा

लघु	बिलाड़	आङन	टोल	माथ	छोट
गुरु	बिलड़ा	अङना	टोला	माथा	(छोटा)
गुरुतम	बिलड़बा	अङनमा	टोलबा	मथबा	छोटका

बहुत नामक केवल दू स्वरूप पाओल जाइत अछि, जेना उजर : उजरा, बाट: बटबा, ताम : तामा, हार : हरबा। गुरु आ' गुरुतम स्वरूप तीन प्रत्ययसँ बनैत अछि – आ, बा तथा मा। एहि प्रत्यय सभक विवेचन तद्धितान्त नाम प्रकरणमे (37) देखू। एतय एकरा सभक अनुषंगी भाव, व्याकृति (व्याकरणमूलक कृत्य) तथा प्रयोग-सन्दर्भ देखल जाय।

आ प्रत्ययक एक अर्थ प्रभेद देखाओल गेल अछि। यथा उजरा कुरता भेल "उजर प्रभदेक कुरता," परन्तु एतबहिसँ एकर भावार्थ स्पष्ट नहि होइत अछि। उजर कुरता आ' उजरा कुरता दूनूक अङरेजी अनुवाद होयत क्रमश: White shirt तथा The white shirt एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे मैथिलीमे आ प्रत्यय सैह काज करैत अछि जे अङरेजीमे the। अर्थात् आ प्रत्यय एतय विशेष-निर्धारक (specifier, determiner, difinitive) थिक। निम्नलिखित आरेखसँ ई बात स्पष्ट होयत।



केवल कुरता कहने मानि लेल जाय वृत्त 3 सँ घैरल क्षेत्र बुझाइत अछि अर्थात् सभ रंगक, सभ प्रकार आ' सभ स्थानक कुरता। उजर कुरता कहने वृत्त 2क भीतर वृत्त। सँ घेरायल क्षेत्र बुझाइत अछि, अर्थात् आन रंगक छाड़ि उजर रंगक सभ कुरता। उजरा कुरता कहने वृत्त 2क अभ्यन्तर वृत्त। सँ घेरल क्षेत्र बुझाइत अछि, अर्थात् सभ उजर कुरता नहि, कोनो खास उजर कुरता। छोट बच्चा मनोरंजक होइत अछि अर्थात् कोनो छोट बच्चा। छोटका बच्चा बड़ सुन्दर अछि, एक खास छोट बच्चा।

उपर्युक्त उदाहरण विशेषणक थिक। किन्तु संज्ञामे ई आ प्रत्यय तिर्यक्रूप बनबैत अछि, यथा ई आङन; एहि अङनामे; शुद्ध सोन; सोनाक गहना। ई तामाक लोटा शुद्ध तामसँ (तामासँ नहि) बनल अछि। ई रूपभेद भावार्थमूलक नहि, शुद्ध व्याकृतिमूलक थिक।

गुरुतम स्वरूप शुद्ध स्वार्थिक थिक; एकर कोनो भावार्थ नहि छैक। शैलीक दृष्टिएँ एहिमे किछु कोमलता आ' ग्राम्यता झलकैत अछि। एकर प्रयोग जतेक भोजपुरी आ' मगहीमे होइत अछि ततेक मैथिलीमे नहि। लेटरबा के उतरबा गइल कि ना हो? एहन-एहन वाक्य भोजपुरीमे भेटत, मैथिलीमे लेटरबाक उतरबा कहिओ नहि भेटत।

प्राचीनमे सेहो गुरुतम रूपक प्रयोग भेटैत अछि, परन्तु से ततय जतय गमार परिवेश आ' स्वर झलकयबाक रहैत छैक। यथा

बिरलाकेँ भल खिरहर सोम्पलह। अगर चाँदन के गढ़ल **ओसरबा**
तेहि **बिरलबाके** मुखसुखे खाएल। बिधुमुखि बैसलि **पसरब**।
देखलि सो हाउलि मानिक **हटिआ**। तौं भुलि रहल **गमरबा**।
कनकें बँधाउलि **बटिआ**।

एहन प्रयोग केवल ग्राम्य शैलीक गीतमे भेटत, नागर शैलीमे कतहु नहि।

व्यक्तिनाममे सेहो अनादर (निम्न कक्षा) व्यक्त करबाक हेतु गुरुतम रूपक प्रयोग होइत अछि (देखू 32)।

§ 33. शब्द-रचना

बहुत शब्द तैआर माल जकाँ स्वतः बनल रहैत अछि, जेना हाथ, गोड़, पेट इत्यादि। बहुत शब्द गढ़ल जाइत अछि, जेना हाथ सँ हथगर, गोड़ सँ गोड़गर, पेट सँ पेटू इत्यादि। पहिल प्रकारक शब्द रूढ़ कहबैत अछि आ' दोसर प्रकारक यौगिक। यौगिक शब्दक विवेचन ओकर रचनाक रीतिक संग पश्चात करब, पहिने रूढ़ शब्दक विवेचन कयल जाय।

§ 34. रूढ़ शब्द

जाहि शब्दमे कोनो रचनांग नहि रहैत अछि, अर्थात जकर कोनो अंश अर्थवाला नहि रहैत अछि से रूढ़ कहबैत अछि। रूढ़ शब्दमे सामान्यतः दू वा तीन अक्षर, अधिकसँ अधिक चारि मात्रा अथवा अधिकाधिक दू स्वनभक्ति (सिलबुल) रहैत अछि, जेना हाथ, मुह, पोखरि, मचान, हाथी इत्यादि। चारि वा ताहिसँ अधिक अक्षरवाला शब्द कदाचित रूढ़ भेटत। अदनार थान मे अदनार एकर अपवाद बूझि

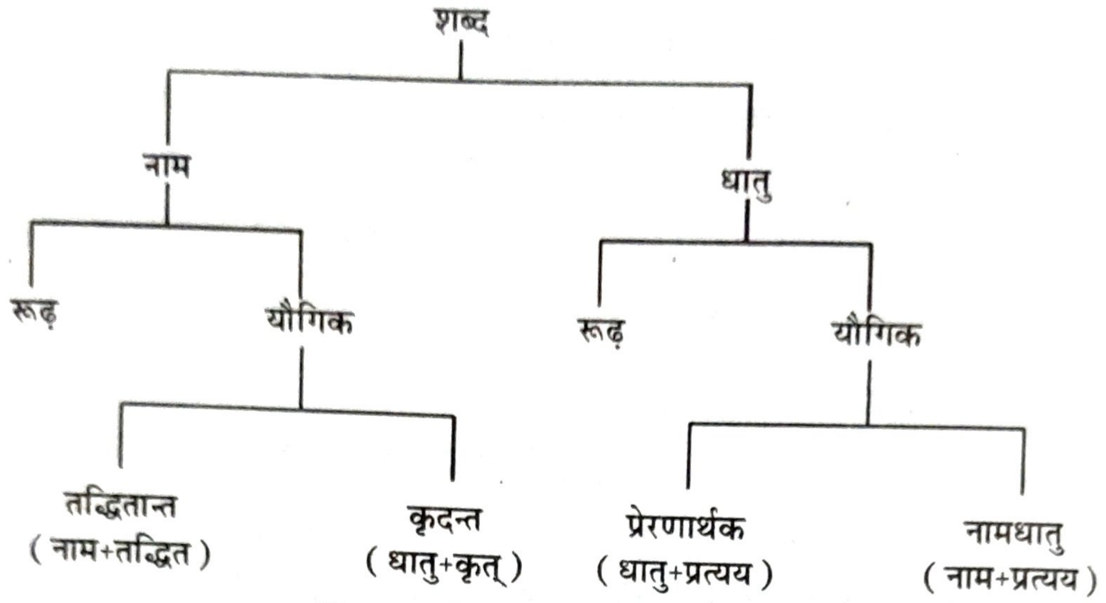
पड़त, परन्तु तत्वत: इहो यौगिक थिक-अद (> आर्द्र "बिनु सूखल") + नार (> नाल "डाँड"), अर्थात् "बिनु सूखल डाँटबाला"। धातु सेहो रूढ़ आ यौगिक होइत अछि, जेना सुनैत छी मे सुन रूढ़ थिक; सुनाबथु मे सुनाब यौगिक (सुन + आब)। परन्तु धातुक विवेचन आगाँ कयल जायत। रूढ़ शब्द अव्युत्पन्न सेहो कहबैत अछि, किएक तँ एकर व्युत्पत्ति (व्याकरणद्वारा रचना) नहि होइत अछि। एहिना यौगिक केर पर्यायवाची थिक व्युत्पन्न।

§ 35. यौगिक शब्द

यौगिक शब्द से थिक जे धातु, प्रत्यय आदि दू वा अनेक रचनांगक योगसँ रचित हो आओर जकर रचनामूलक अर्थ (व्युपत्त्यर्थ) सभ मैथिलीभाषी बूझय। कोनो-कोनो नभामे यौगिक शब्द अधिक अछि तँ कोनो-कोनोमे कम। एहि दृष्टिएँ बंगला, हिन्दी आदि अनेक भाषाक तुलनामे मैथिली अधिक समृद्ध अछि। डा. सुभद्र झा मैथिलीमे प्रचलित 264 प्रत्यय आ' 26 उपसर्ग गनओलनि अछि। एहिना महावैयाकरण दीनबन्धु झा 1135 धातु गनओने छथि। एहि विस्तृत रचनांग सभक क्रमविपर्यास (permutation and combination) द्वारा असंख्य शब्द बनाओल जाय सकैत अछि। परन्तु एहि रीतिएँ शब्द-रचनाक जतेक क्षमता (competence) छैक, ततेक उपलब्धि (performance) नहि देखि पड़ैत अछि, किएक तँ अनाइ, -अनिहार, -ल, -ब, ई चारिए टा कृत-प्रत्यय (36) एहन अछि जे सभ धातुमे लगाओल जा सकय।

यौगिक शब्द बनयबाक दू आधार होइत अछि-नाम (मुक्त शब्द, प्रातिपदिकं) आ' धातु। जाहिसँ कोनो व्यक्ति, वस्तु, भाव वा गुण बूझल जाय से नाम (वा शब्द) कहबैत अछि। एकर दू भेद अछि-संज्ञा आ' विशेषण। जाहिसँ केवल क्रियाक बोध हो से धातु कहबैत अछि। नाम आ' धातु दूनू दू-दू प्रकारक होइत अछि-रूढ़ आ' यौगिक। रूढ़ नामक विवेचन भ' चुकल। यौगिक दू प्रकारक अछि। नाममे प्रत्यय लगाय बनल नाम यौगिक नाम कहबैत अछि आ' धातुमे प्रत्यय लगाय बनल धातु यौगिक धातु कहबैत अछि। एहि दूनू आधारक अनुसार प्रत्यय दू प्रकारक अछि-नाममे लगनिहार तद्धित प्रत्यय कहबैत अछि आ' एहिसँ बनल नाम तद्धितान्त नाम कहबैत अछि। धातुमे लगनिहार प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहबैत अछि आ' ताहिसँ बनल नाम कृदन्त कहबैत अछि। एहिना यौगिक धातु दू प्रकारक अछि-धातुमे प्रत्यय जोड़ि बनल जे प्रेरणार्थक कहबैत अछि, आओर नाममे प्रत्यय जोड़ि बनल जे नामधातु कहबैत अछि। स्पष्ट बोध हेतु सारिणी 7 मे देखू :

सारणी 7 : शब्दक व्युत्पत्तिक्रम



कृदन्त (धातुमूलक) शब्द

§ 36. कृदन्त शब्द

धातुमे प्रत्यय लगाय बनाओल शब्द कृदन्त (primary derivative) कहबैत अछि। से अर्थक अनुसार तीन प्रकारक होइत अछि। यथा,

भाववाचक-रोक, टोक, जीत, नाप, जोख (प्रत्यय अ वा शून्य); रोपनि, सीअनि, थाकनि (प्रत्यय नि); लिखाइ, पढ़ाइ, सिआइ, (प्रत्यय आइ) इत्यादि।

कर्तृवाचक-यथा, लिखनिहार "लेखनकर्ता", गेनिहार (प्रत्यय अनिहार); सुतनमा, फड़नमा (प्र. अनमा); चलांक, उड़ाक, लड़ाक, (प्र. आक)

करणवाचक-यथा, चालनि "जाहिसँ चालल जाए", बाढ़नि, लाड़नि (प्र. अनि); मुनना, नपना, पोतना (प्र. अना)।

एहि तीनूमे पहिल आ' तेसर संज्ञा थिक, दोसर विशेषण।

कृदन्त नाम निम्नलिखित प्रत्ययसँ बनल पाओल जाइत अछि :

अ-ई बूझू शून्य रूप प्रत्यय थिक। सोझे धातु नाम बनि जाइत अछि। यथा, ठक "ठकनिहार", चोर "चोरनिहार", पानिभर "पानि भरनिहार", लठिधर, घेँटकट; (कर्ता अर्थमे)। घोड़कस "घोड़ा जाहिसँ कसल जाय से डोरी", बतरख "बाती जाहिसँ यथास्थान स्थिर राखल जाय से बाँस", (करण अर्थमे)। छीक "छीकब क्रिया", फूक, रोक, टोक (भाववाचक संज्ञा, जकर उदाहरण बहुत अछि)। एकर मूल थिक प्राभा. अ (पाणिनिक शब्देँ घञ्, अच् इत्यादि) जेना चरतीति चरः; जीवतीति जीवः; इत्यादिमे देखल जाइत अछि।

अक्कड़-घुमक्कड़, बुझक्कड़, गपक्कड़, सुतक्कड़, पिअक्कड़ ।

अक्का-उड़क्का "उड़निहार", लड़क्का "लड़निहार" । वस्तुत: ई आक प्रत्यय थिक (देखू आगाँ) । अन्ताघात (final accent) क कारणे ई रूप भ' गेल ।

अता-चलता "चलनशील, प्रचलित", बोलता, छुटता, फिरता, बढ़ता, लगता, खगता, निबहता "निर्वाह" । एकर मूल प्राभा अन्त भ' सकैत अछि ।

अती-पुरती "पुरबाक समय", क्रियाविशेषण; जइती; अबती; फिरती; बढ़ती एकर मूल प्राभा. अत् (शतृ) भ' सकैत अछि, किन्तु ईकार कतसयँ आयल ?

अन-उलटन, पलटन, पटकन, फटकन, ऐँठन, ओढ़न "ओढ़बाक वस्त्र", पहिरन "परिधान", बिछाओन, ओछाओन, ओरिआओन, लेआओन, सभ भाववाचक । मूल प्राभा अन ।

अना-सुतना "अधिक सुतनिहार", मुतना सेजमुतना, घरघुसना । ईसभ शील वाचक थिक । टेकना "जाहिसँ टेक देल जाय", पिटना, खोरना, मुनना, ओढ़ना, पहिरना, मुहदेखना, (करा/उपकरण वाचक) । मूल प्राभा अन + क, यथा परिधानक > परिहनअ ।

अनाहर - दे. अनिहार ।

अनि-चालनि, "चालबाक उपकरण", बाढ़नि, उबहनि, लागनि (करणवाचक) रोपनि "रोपनाइ", सीअनि, थाकनि, गाँथनि, गढ़नि, तामनि (भाववाचक) । मूल प्राभा अन + ई (स्त्रीप्रत्यय), तु. मार्जनी, लेखनी ।

अनी-बुकनी "बूकल वस्तु", चटनी "चटबाक वस्तु", कतरनी "कतरबाक उपकरण", थकरनी (साधन-वाचक) । कहनी/कहिनी "कथन", मँगनी "माङब", करनी "क्रिया", नोचनी (भाववाचक) । मूल प्राभा. अनिका, यथा कथनिका > कहनिअ > कहनी । प्राभा. अनी एकर मूल नहि भ' सकैत अछि, किएक तँ तखन-अनि ह्रस्व भए जाएत ।

अनिहार-सुननिहार "श्रवणकर्ता", गेनिहार "मनकर्ता", रखनिहार "रक्षणकर्ता" । ई कर्तृवाचक सार्वत्रिक प्रत्यय थिक, अर्थात् "कर्ता" अर्थमे ई सभ धातुमे लगाओल जा सकैत अछि । ई ब्रजभाषा, हिन्दी आदि आनहु भाषामे चलैत अछि, यथा माखन चाखनहार है राखनहारो । एहिमे दू प्रत्यय जुटल अछि, कारण जे प्रत्यय स्वभावत: एके-दुइ अक्षरक होइत अछि । एकर मूल प्राभा. अन + कार भ' सकैत अछि । यथा रखनिहार > रक्षणकार । परन्तु दुइ गोट विसंगति अछि, क् केर स्थानमे इ आएब । द्रष्टव्य जे हिन्दीमे द्वितीय विसंगति नहि अछि । एकर रूपान्तर अछि-अनाहर । यथा देखनाहर, सुननाहर ।

अनुक-बुझनुक "बुझबामे समर्थ", बढ़नुक "बढ़वामे समर्थ", देखनुक "देखबाक योग्य"। एकर मूल प्राभा. अन + मुख भ' सकैत अछि। यथा, वर्धनमुख > बढ़नउँ्ख > बढ़नुक। एकर तीनिएटा उदाहरण भेटैत अछि।

अन्ती-बढ़न्ती "वृद्धि", घटन्ती "ह्रास", उड़न्ती "प्रवाद, अफवाह"। मूल प्राभा. अन्त्।

अन्तू-उड़न्तू "उड़नशील", घुमन्तू "भ्रमणशील", उठन्तू "उन्नतिशील", बढ़न्तू "बढ़नुक"। मूल प्राभा. अन्त् + उक। यथा बढ़न्त + उक > बढ़न्तुअ।

अब-कहब "कहनाइ", देखब "दर्शनक्रिया", सुनब "श्रवण क्रिया"। ई क्रियावाचक संज्ञा (verbal noun) बनबैत अछि। ई सार्वत्रिक थिक, अर्थात् सभ धातुमे लगाओल जा सकैत अछि। एकर हिन्दी प्रतिरूप थिक ना, जेना करना, देखना। ई-अब मैथिलीकें बंगला, भोजपुरी, हिन्दी आदि बहुतो भाषासँ फुटबैत अछि। एकर मूल प्राभा-तव्य कहल जाइत अछि। यथा, तव्य > तव्व > अव्व > अब; कर् + तव्य > करअब > करब।

अल-देखल, सुनल, खाएल, भेल ई भूत कृदन्त बनबैत अछि। एकर हिन्दी प्रतिरूप थिक-आ, यथा देखा, सुना, खाया, हुआ। अब जकाँ इहो नभाकें दू भागमे बँटैत अछि। इहो अब जकाँ सार्वत्रिक थिक। एकर प्रयोग क्रियार्थक संज्ञाक रूपमे सेहो होइत अछि। यथा देखलासँ चीन्हल। द्रष्टव्य जे क्रियावाचक संज्ञा होइतहुँ एहिमे भूत कालक भान होइत अछि। यथा

देखबासँ पहिने "जखन देखनाइ नहि भेल छल तखन"

देखलाक बाद "जखन देखना भए गेल।

तखन द्रष्टव्य जे द्वितीय वाक्यमे देखबाक अशुद्ध होयत तँ पहिल वाक्यमे देखलासँ अशुद्ध होयत। एकर मूल बड़ विवादास्पद अछि। सुभद्र झा एकर मूल प्राभाक अनुमित प्रत्यय अल > मभा अल्ल मानैत छथि। एहि ल केर प्रयोग कतहु-कतहु नाममे युक्त अर्थमे सेहो होइत अछि। यथा, भूखसँ युक्त भूखल; पिआससँ युक्त पिआसल।

आ-ई समासान्त प्रत्यय थिक जे नाम + क्रिया समासमे लगैत अछि। देखू समास-प्रकरण (38)। यथा, मुहदुस्सा "जे मुह दूसए", घसकट्टा "जे घास काट", नकपिच्चा "जकर नाक पीचल हो", फुलतोड़ा "जाहिमे फूल तोड़ि-तोड़ि राखल जाय"। ई किछु धातुमे समाससँ अन्यत्रो लगैत अछि। यथा फाँड़ा "फाँड़िक", दू टूक कए बनाओल अँचार", ठसिना, त्वाढ़ा, छुट्टा, गारा। एहि सभक प्रयोग संज्ञा आ' विशेषण दूनू रूपमे होइत अछि। मूल प्राभा अक भ' सकैत अछि, जेना गालक > गारअ > गारा।

आइ-एहिसँ क्रियावाचक संज्ञा बनैत अछि। भराइ "भरबाक क्रिया", उघाइ, पढ़ाइ। एकर मूल प्राभा. आपिका भ' सकैत अछि, जेना लिखापिका > लिखाइअ > लिखाइ।

आउ-बिकाउ, चढ़ाउ, नुकाउ, जड़ाउ आइ, आउ तथा आओ तीनूक अर्थ आ, मूल सेहो लगभग एके अछि। आओ हिन्दीक प्रकृति, आउ मैथिलीक। आउ मे पुनः तुच्छता सूचक आ' लगायब चलल अछि। यथा, प्राचीन बिकाउ, नवीन बिकाउ + आ > बिकौआ, बनौआ। दे. औआ सेहो।

आओ-एहिसँ भाववाचक आ' क्रियावाचक संज्ञा बनैत अछि। यथा, बढ़ाओ, चढ़ाओ, घेराओ, बहाओ। मूल प्राभा. आप, यथा वर्धापक > बड्ढावअ > बढ़ाओ। तुल. प्राभा. आपिका। स्त्रीलिंग आपिका सँ आइ तथा पुलिंग आपक सँ आओ। तुल. आउ सेहो।

आक-चलाक "खूब चलनिहार अर्थात् धूर्त", उड़ाक, लड़ाक/लड़ाकू/लड़ाका। मूल प्राभा. आक, जेना पताक, लुण्ठाक मे। ई नवीन तद्भव थिक तेँ क टिकल रहल।

आओन-चुमाएब सँ चुमाओन, मुहदेखाओन, बुझाओन, मनाओन, डराओन, घिनाओन, सुखाओन, दुहाओन, पोसाओन, बहताओन, लेआओन, दुरिकराओन, झगड़लगाओन, डराओन, पुराओन, मुहछुआओन। मूल प्राभा आपन, जेना चुम्बापन > चुम्मावन > चुमाओन।

आँत-उडाँत "उड़ाबमे कुशल", चराँत "चरबाक हेतु नियत भूमि", पडाँत "पड़ल अर्थात् गैरआबाद खेत"। मूल प्राभा वर्तमान कृत्-प्रत्यय अन्त्।

आन-उड़ान "उड़नाइ क्रिया", गुड़कान, थकान, छरपान, तड़पान, चलान, पन्हान, सोन्हान। मूल प्राभा आपन, जेना उड्डापन > उड़ाओन > उड़ान। द्रष्टव्य जे ई प्रत्यय पूर्वमे आओन छल जे संकुचित भ' आन भ' गेल।

आर-चिन्हार "चीन्हल, परिचित", जनार "परिचिन", "देखार" "प्रकट" (विशेषण), सुतार "सुतरब, सिद्ध होएब" ललकार, चुचकार, बकार झोँकार। मूल प्राभा कार।

आह-कटाह "कटबाक प्रवृत्तिबाला", धराह, पिछराह, गुड़काह, खिसिआह, तमसाह, अगुताह, बिसराह, हबकाह (विशेषण); स्त्रीलिंग आहि। मूल प्राभा-आभ जेना पिच्छलाभ, "पिछड़बाक आभा" (अर्थात् लक्षण बाला)।

आहु-उसराहु "सरलतासँ उसरबा जोग", उपजाहु, जुमाहु। मूल प्राभा पातुक, भावुक आदिक उक भ' सकैत अछि। हकार मुखसुखार्थ आबि गेल होयत।

इ-मारि "मारनाइ", हारि "हारनाइ", चालि, बाढ़ि, चोरि, छूति, लूटि, गोहरि (भाववाचक/क्रियावाचक संज्ञा)। प्राभामे कारिका, शायिका इत्यादि भाववाचक संज्ञा भेटैत अछि; कां कारिकां त्वम् अकार्षी; "तों कोन क्रिया कयलह ?"। ई इका प्रत्यय एकर मूल भ' सकैत अछि-चोरिका > चोरिअ > चोरि।

इआ-कुटिआ "कुटबाक व्यवसाय", पिसिआ, लिखिआ (क्रियावाचक संज्ञा)। मूल पूर्वोक्त प्राभा इका।

ई-हँसी "हँसबाक क्रिया", बिहुँसी, चमकी, सगबगी, मुसकी (भाववाचक संज्ञा)। एकरो मूल पूर्वोक्त इका भ' सकैत अछि, यथा हासिका > हासिआ > हँसिअ > हँसी।

उआ-रन्हुआ "रान्हिकें बनाओल", किनुआ "कीनिकें आएल", भरुआ, तरुआ, गोहुआ, पोछुआ, भकुआ, भँड़ुआ, मुहजरुआ, रोपुआ, महुआ, गढ़ुआ, नटुआ, पढुआ, गहुआ, लगुआ। मूल प्राभा उक + आ।

ऊ-पितामरू "मरल पित्त बाला", पनिजँतू "पानिसँ जाँतल", गछपक्कू "गाछाहिमे पाकल, तोड़िकें पाकओल नहि", मूल पूर्वोक्त उक। देखू समास (38) सेहो।

ऐआ-गबैआ "गानकर्ता", देखबैआ "देखरेख कएनिहार", खेबैआ। मूल अनुसन्धेय। देख धातुसँ देखैआ होयबाक चाही, बीचमे ब गबैआ इत्यादिक सदृशानुकरणवश आयल बुझाइत अछि।

ऐक-सेबैक "देवताक सेवा कएनिहार, मन्दिरक मुख्य पूजक वा अध्यक्ष", फेरबैक "फेरी बाला दलाल"। मूल अनुसन्धेय।

ऐका-कहबैका "प्रौढ़तापूर्वक उचित बात कहनिहार", देखबैका "पर्यवेक्षक, रक्षक", मूल अनुसन्धेय।

ऐत-ई वर्तमान कृदन्त बनबैत अछि आ' सार्वत्रिक थिक। यथा, करैत अछि, देखैत रहत। देखू 36।

ऐनी-कुड़िऐनी "कुड़िऐनी "कुड़िअएबाक प्रवृत्ति", टटैनी, सुखैनी, कमैनी कमाएब, अर्जन करब", "खेतमे घास-पात साफ करब", पड़ैनी "पड़एबाक प्रवृत्ति" बौंऐनी, छिछिऐनी। मूल आपन > आवन > आअन > आयन > आइन + ई।

औआ-बिकौआ "बिकाएल", चोरौआ "चोराओल", चढ़ौआ, बझौआ। मूलतः ई आउ थिक, जाहिमे प्रकारवाचक आ लागल अछि। तुल. हिन्दी बिकाऊ, टिकाऊ।

औनी-सुखौनी "सुखएबाक प्रवृत्ति", पढ़ौनी, खटौनी, बिलौनी। मूल प्राभा आपन > आवन > आओन + ई > औनी। तुल. सुखौनी, बिलैनी।

ता/ती- दे.-अता, अती ।

बाला-देखयबाला "देखनिहार", करयबाला "कयनिहार" । ई वास्तवमे तद्धित प्रत्यय थिक (देखू 37) । क्रियापदमे ई केवल असमापीक आगाँ पृथक् पद रूपमे लगैत अछि । ततए एकरा प्रत्यय कहब समीचीन नहि होयत । हिन्दीमे देखनेवाला एहने विचित्र प्रयोग थिक । मिलाउ देखने जाता हूँ, देखय जाइत छी । एकरा असार्वत्रिक (defective) क्रियावाचक संज्ञा कहि सकैत छी, यथा देखय चाहैत छी "देखनाइ (दर्शन) चाहैत छी" । देखय जाइत छी "दर्शन (हेतु) जाइत छी" ।

तद्धितान्त (नाममूलक) शब्द

§ 37. तद्धितान्त शब्द

तद्धित प्रत्यय लगाए बनल नाम तद्धितान्त नाम (secondary derivative) कहबैत अछि । कृत्-प्रत्यये जकाँ तद्धित-प्रत्ययो बहुत अछि, परन्तु प्रचुर उदाहरण बाला थोड़ अछि, ताहूमे सार्वत्रिक तँ आओर थोड़ । एत' प्रसिद्ध तद्धित प्रत्यय अर्थानुसार उदाहरण सहित देखाओल जाइत अछि ।

(क) सार्वनामिक तद्धित

(1) सादृश्यवाचक - हन : जेहन, तेहन, एहन, ओहन, केहन, विभाषामे आ प्रामै. मे जइसन, तइसन इत्यादि ।

(2) रीतिवाचक - ना : जेना, तेना, एना, ओना, कोना ।

(3) मात्रावाचक - जतबा, ततबा, एतबा, ओतबा, कतबा अवधारक निपात लगओने ई सभ बा सँ ना भए जाइत अछि, जेना जतबा + ए > जतबे, जतना + ए > जतने । विकल्पतः ने, नी भए जाइत अछि जतबा/जतना + ए जतने वा जतनी । एहिना, ततबे, ततने, ततनी, तीन-तीन स्वरूप ।

(4) दिशावाचक - जेम्हर, तेम्हर, एम्हर, ओम्हर, कोम्हर । विभाशामे जेनी, तेनी, कोनी ।

(5) स्थानवाचक - जतय, ततय, एतय, ओतय, कतय । जहाँ, तहाँ कहाँ (एहाँ, ओहाँनहि) ।

(6) कालवाचक - (क) दिनरूप-जहिआ, तहिआ, कहिआ (एहिआ, ओहिआ, नहि) । (ख) क्षणरूप-जखन, तखन, एखन, ओखन, कखन । विभाषामे जबे, जब इत्यादि ।

(ख) सामान्य तद्धित

(7) भाववाचक - **(क) आइ**-गोराइ, मोटाइ, जेठाइ, छोटाइ, बड़ाइ, चकराइ, गहिँराइ, चिकनाइ, समरथाइ, उँचाइ, लम्बाइ, अमताइ, मिठाइ । **(ख) ई**-हरिअरी, उजरी, पीरी, लाली, टेढ़ी, तैआरी, इआरी । **(ग) आरी**-बुढ़ारी, नबारी ।

(8) व्यवसायवाचक - (क) इ-हरबाहि, कोदरबाहि, आगरबाहि, गैंबाहि, जलबाहि, कोरबाहि, रखबारि, बटबारि, बगबारि, गैबारि, महिसबारि, चारि। (ख) ई-कहारी, बेगारी, लोहारी, कमारी, सोनारी, महन्थी, महाजनी, खबासी, चाकरी, नोकरी, गोड़ाइती, पैंजआरी। (ग) गिरी-बैदगिरी, सिपहिगिरी, नेतागिरी, मुखिआगिरी, सिपहिगिरी, ओझैगिरी। (घ) ऐती-कुदुमैती, घटकैती, पंचैती, डकैती।

(9) भाव, प्रकृति ओ स्वभाव वाचक-(क) **पन, पना, पनी**-नेनपन "नेनाक भाव (शिशुत्व)", एहिना नेनपना, नेपनी, बुड़िपन, बुड़िपना, बुड़िपनी, कबिलपन, चुगिलपन, गमरपन, चतुरपन, मोचडंपना। (ख) **ई**-बुधिआरी, बुड़िबकी। (ग) **आइ**-चतुराइ, भलाइ, पण्डिताइ।

(10) प्रभेदवाचक-(क) **आ**-कारी प्रभेदक करिआ मेघ, उजरा, पीरा, चितकबरा, कैला, कुइरा, गुलबिआ, सबरंगा, एकरंगा, पँचरंगा, पुरना, मेंआ, अधलाहा, बतहा, पनिआहा। (ख) **का**- उजरका, करिक्का, पुरनका, मेहिक्का, ललका, हरिअरका, पिअरका, छोटका, मोटका, बड़का, नबका, पकलका। (ग) **हा**-अबलहा, लटलहा, निकहा, हलुकहा, उत्तमहा, दुबरहा, गरिबहा, खरखरहा, सड़लहा, अमतहा। (घ) **औआ**-अमतौआ, मधुरौआ, चमकौआ।

(11) युक्तवाचक-(क) **गर**-पानिसँ युक्त पनिगर, लूरिसँ युक्त लूरिगर। ई प्रत्यय जाहि-जाहि शब्दमे लगैत अछि तकर सूची दीनबन्धु झा (दोहा छन्दमे) देलनि अछि :

माटि पानि खढ़ देह फल तेल नोन धन धान।
दूध माछ आमिल हरदि थाल हाल बल फान ॥
यथा बोध जन जूति मन प्राणि अंग सक जोर।
दाम रुपैआ झोर जल पात लोक भर पोर ॥

यथा मटिगर, पनिगर, खढ़गर इत्यादि। रुपैआ मे आ लुप्त भए जाइत अछि, रुपैगर। प्राणीक अंग हथगर, गोड़गर, आँखिगर। (ख) **बाला**-पागबाला, टोपीबाला। ई प्रत्यय सार्वत्रिक थिक आ कोनहु संज्ञामे बिना ध्वनि परिवर्तनहि लगैत अछि, जेना पानबाला, दूधबाला। (ग) **मन्त, बन्त**-गुणमन्त, धन बन्त, बलमन्त, पुनमन्त। (घ) **ई**-गुणी, धनी, मानी, अभिमानी, ज्ञानी, मात्सर्जी, भारी। (ङ) **आह**-तमसाह, ठकटाह, धुमसाह, तेलाह, मटिआह, रोड़ाह, सान्हाह, बनाह, जंगलाह, घुनाह, दिबड़ाह, गोबराह, खुँदिआह, कँटाह, थलाह, रोगाह। (च) **आर**-गोआर, पँजिआर, बुधिआर।

(12) बन्धुत्ववाचक-(क) **औत**-मामक बेटा ममिऔत, माउसिक बेटा मसिऔत, **एहिना** पिसिऔत, पितिऔत, सौतिनिक बेटा सतौत, बहिनिक बेटा महिलाक हेतु **बहिनौत** (किन्तु पुरुषक हेतु भागिन)।

(13) वास वा उपजाक स्थलक वाचक-एकर भिन्न-भिन्न शब्दक हेतु भिन्ने-भिन्न प्रत्यय अछि जे उदाहरणहिसँ स्पष्ट होयत। धान उपजबाक खेत धनहर, खढ़ उपजबाक खढ़होरि, केराक बाड़ी करजान (कदली उद्यान), तेल पेरबाक स्थान तेलिआरी, गोँढ़िक वास गोँढ़िआरी, कोइरीक वास कोरिआनी, मुसहरक वास मुसहरी, काठ चिरबाक-कटबाक स्थान कठाल (काष्ठालय), कमारक कार्यशाखा कमरसारि। कोल्हुक (कुसिआर पेरबाक) स्थान कोल्हुआर।

(14) लघुतावाचक–ई-छोट थार थारी, तसली, बाटी, सोबरनी, पनबट्टी, चङेरी, डाली, कड़ाही, आसनी, खाम्ही, धामी, मटकुड़ी, कोही, छाँछी, पोथी। प्रकीर्ण छोट लोटा लोटकी, कूड़ा-कुड़नी, करछु-करछुल्ली, कोठी-कोठुली, कठौत-कठुली।

(15) सम्बन्धवाचक-(क) **उक**-आज भेल आजुक, काल्हि भेल काल्हुक, परसुक, भोरूक, साँझुक, दिनुक, रातुक, तखनुक, एखनुक, जखनुक, तखनुक, कखनुक। प्रभेद अर्थमे एहि सभसँ आगाँ आ लगैत अछि, अजुका समाचार पढ़ल (देखू 37)। (ख) **इल**-माझमे भेनिहार माझिल, साँझमे (सन्धिमे अर्थात् माझिल आ छोटक बीचमे) जनमल साँझिल, देसिल, आगिल, पाछिल आगाँ प्रभेदार्थक आ लगलापर देसिला, अगिला, पछिला, बिचला, निचला, कोनैला। (ग) **ऐआ**-गमैआ, घरैआ, बनैआ।

(17) आदर-अनादार द्योतक-व्यक्तिवाचक नाममे ओहि व्यक्तिक सामाजिक प्रतिष्ठाक अनुसार किछु प्रत्यय लगाओल जाइत अछि। एहिमे अधिक अनादार द्योतक अछि जे सामान्यतः तृतीय कक्षाक (रओ-कक्षाक) व्यक्तिक नाममे लगैत अछि।

(क) **अनादर-द्योतक**-(i) **आ**-रबिआ "रवि दिन जनमल", सनिआ, बौका, नँगड़ा, बतहिआ। (ii) **बा**-हरिहरबा, गेनबा, भोलबा, हितबा, ठकबा। (iii) **मा**-सोनमा, कंचनमा, धनमा। मूलतः ई-बा थिक जे समीपवर्ती नासिक्य न केर प्रभावेँ मा भय गेल अछि-सोन + बा > सोनबाँ > सोनमा। (iv) **ना**-बुधना, रुपना, सुकना "शुक्र दिन जनमल", ठकना, बुचना। ई आदरार्थक न मे आ लगाय बनल अछि।

(ख) **आदर-द्योतक**-(i) **आइ**-गेना सँ गेनाइ, बूच सँ बुचाइ, बनमाली सँ बनाइ। (ii) **ऊ**-बौकू, सोनू, मंगलू, बिलु, बतहू, बिलटू, भोलू। (iii) **ओ**-(केवल महिला) खजनी सँ खजनो, मुनरो, सोमनो, बतहिओ (iv) **न**-सोमन, बुधन, सुकन, डोमन।

(18) सादृश्य-द्योतक-आइन-गोबराइन "गोबर सन गन्धबाला", अतिखाइन "अतिरिक्त अर्थात् कनेक तीत-सन स्वादबाला", सड़ाइन मछाइन, जराइन।

(19) आभास-द्योतक- आओन-अन्हराओन "अन्धकारक आभास बाला", बिहरिआओन, मेघाओन, भयाओन, डराओन, घिनाओन, बदरिआओन, बुढ़ाओन, नेनाओन।

(20) [illegible] (क) [illegible] ... [illegible] ... [illegible] भरिजा, [illegible] ।

(21) [illegible] (ख) [illegible] भावाक क्रिया", [illegible] ... (ख) [illegible] भात-भाती, लाल-लाली, [illegible] ।

(22) [illegible] [illegible] "[illegible]", [illegible] पसरौटी, कठौत, लहठी ।

(ग) तद्धित प्रत्यय ([illegible])

अर्थानुसार तद्धित प्रत्यय [illegible] ... तकर वर्णमालाक्रमे शास्त्रीय विश्लेषण [illegible] ।

अइ-ई केवल तीन शब्दमे [illegible] ... आङनसँ अङनइ तथा मह (>मउ) सँ [illegible] ... ध' संकेत अछि, जे यष्टिका, वटिका इत्यादिसँ [illegible] ... अछि । परन्तु अ तथा इ केर सामुख्य एह' [illegible] अछि ।

अका-ई अवस्थितसूचक थिक । यथा, [illegible] इत्यादि । [illegible] व्युत्पत्ति सम्भवतः द प्रत्ययक योगसँ [illegible] ... तथा प्रभेदार्थक क्रमशः अक + आ । तुलनीय [illegible] ।

अला-एकर मूल प्राभा र ध' संकेत अछि [illegible] (अध+र) मे देखल जाइत अछि, यथा, निचला ([illegible]) ।

आ-ई तीन प्रकारक अछि । पहिल, [illegible] ... अबैत अछि । जेना बाभनक गाम बभनगामा । एकरा प्रत्यय [illegible] ... कहब अधिक उपयुक्त होयत । अथवा सामासिक [illegible] ... [illegible]मे भूत कृदन्त ल केर स्थानमे आयल अछि । जेना, [illegible] ... [illegible], कुचल - कुच्चा । दोसर प्रभेदार्थक थिक, यथा [illegible] । [illegible] थिक, यथा रामदेव-रमदेवा, बालगोविन्द-बलगोबिना । मूल [illegible] अछि ।

आइ-ई गुणवाचकसँ भाववाचक संज्ञा बनबैत अछि। यथा, मीठस मिठाइ, अमतसँ अमताइ, मोटाइ, छोटाइ। ई व्यक्तिनाममे आदरद्योतक रूपमे सेहो लगैत अछि। यथा, कान्हसँ कन्हाइ, माधवसँ मधाइ, भोलासँ भोलाइ। एकर मूल प्राभा ताति भ' सकैत अछि, यथा मिष्टताति > मिट्ठआदि > मिठाइ।

आइन-मछाइन "माछन गन्धसन गन्धबाला", मुताइन गोबराइन। एकर मूल प्राभा गन्ध वा गन्धि, यथा घृतगन्धि > घिअआँघि > घिवान्हि > घिबाइन। आहनि प्राचीन रूप थिक।

आओन-अन्हराओन "अन्हार-सन आभासबाला", बिहराओन, मेघाओन। एकर मूल प्राभा आगमन भ' सकैत अछि, जेना अन्धकार गमन > अँधराअवँन > अँधरावन > अन्हराओन।

आनी-एकर एकेटा उदाहरण भेटैत अछि कोरिआनी "कोरिसभक बस्ती"। एकर मूल प्राभा आधानी भ' सकैत अछि।

आम-पंडिताम "पण्डितक अनुरूप (व्यवहार)", कएथाम, इसखिआम। एकर मूल प्राभा आत्मन् कहल जाइत अछि, परन्तु एकर रूप मभामे अप्प आ' नभामे आप देखैत छी, आम कतहु नहि।

आर-एकर मूल थिक कार, यथा, पंजीकारसँ पँजिआर, स्वर्णकार सं सोनार, कमार, चमार। बुधिआर मे ई आकर (> आगर) सँ बहराएल होयत।

आरए-एहिसँ तिनिये-चारि शब्द बनल अछि आ' से तीनू पूर्णतः विकलांग एत थिक अर्थात् अव्यय शब्दजकाँ एहिमे कोनो कारक चिह्न वा प्रत्यय नहि लगैत अछि। प्रयोग कर्तामे आ कदाचित् अधिकरणमे देखल जाइत अछि। एकर मूल थिक प्राभा आलय। यथा, समधिआलय > समधिआरय। गोपालसँ हमरा समधिआरय अछि "परस्पर समधिक तुल्य व्यवहार अछि"। मीत-मितारय आन, ताना-बाना आन।

आरी-ई चारि भिन्न-भिन्न अर्थमे पाओल जाइत अछि। यथा, बुढ़ारी "वार्धक्य" भैआरी "भातृत्व" (भाव अर्थमे); तेलिआरी "तेलिक बस्ती", गोँढ़िआरी (निवास अर्थमे) तथा पनिआरी "जलप्लावन"। मूल अनुसन्धेय।

आल-एकर मूल शाला थिक। यथा गोहाल > गोशाला, कठाल > काष्ठशाला।

आह-ई गुणक अल्पता अथवा आभासक द्योतक थिक। यथा, अमताह "अमत-सन, कनेक अमत", अपढङाह" किछु-किछु अपढंग", अगुताह, जिदिआह, असकताह।

आहा-ई आह + आ प्रतीत होइत अछि। यथा, मधुर-सन मधुराह, मधुराह प्रकारक मधुराहा, अमाताहा, दछिनाहा, पछिमाहा।

आहुत-ई चारू दिशा वाचकहिमे लगैत अछि। यथा पछिमाहुत, पुबा, दछिनाहुत, उतराहुत। एकर मूल प्राय-आवर्त प्रतीत होइत अछि, जेना दक्षिणावर्त, दछिनावत > दछिनाहुत।

इ-ई व्यवसायिवाचक शब्दमे व्यवसाय अर्थमे लगैत अछि। यथा कबाड़ा कबाड़ावाला कबाड़, तकर व्यवसाय करबाड़ि। चोरक व्यवसाय चोरि, ठकक व्यवसाय ठकहारि। मूल अनुल्लेख।

इआ-ई मोट-मोटी सम्बन्धार्थक थिक, जकर विस्तार अनेक अर्थमे भेल अछि, यथा, बिदेसिआ (<बिदेसी-आ) "विदेश सम्बन्धी अर्थात् विदेशमे रहनिहार परदेसिआ; भरिआ (भारिक) "भार उघनिहार"; लौहिआ (<लौहिक) "लोहक" अन्हरिआ (> अन्धकारिका रात्रि) "अन्धकारवाला", धमरिआ "धमार गओनिहार"

इल-ई क्रमवाचक थिक। यथा पहिल, मझिल, सँझिल, अगिल, पछिल पुरबिल। एकर मूल समासे इल्ल भेटैत अछि। एकर विशेषीकरण आ लगाए होइत अछि, अगिला, पछिला, पहिला।

ई-इहो पूर्वोक्त इअ जकाँ सम्बन्धवाचक थिक, जेना विदेशसम्बन्धी विदेसी, परन्तु ई सम्बन्ध प्रसंगानुसार अनेक प्रकारक अछि। यथा निवासमूलक सम्बन्ध-परदेसी, पड़ोसी, पहाड़ी, जंगली, देहाती। व्यवसायमूलक सम्बन्ध-कहारी, लोहारी, सोनारी। धारणामूलक सम्बन्ध-रोगवाला रोगी, क्रोधी, तामसी इत्यादि। मूल प्राय इक।

उक-ई सामान्य सम्बन्धवाचक थिक ठीक ओहने जेहन सम्बन्धकारक क। एकर दर्शन केवल समयवाचक शब्दमे होइत अछि। यथा, आजकेर आजुक, कालुक, रातुक, भोरुक, बेरुक, साँझुक, एखनुक। प्रतीत होइत अछि जे एहि प्रत्ययमे उ विकरण थिक, प्रत्ययथिक केवल क, ओएह क जे सम्बन्धकारक चिह्न थिक। तदनुसार उक मूलत: सम्बन्धकारक थिक, परन्तु प्रयोग विकारी विशेषणजकाँ होइत अछि जेना, आजुक समय सोहाओन अछि, आजुका समयमे.....। कालवाचकसँ अन्यत्र एक प्रयोग देखैत छी, जेना सांझुक्का, टेढुक्का, ओतुक्का, एतुक्का।

उज/उझ-एकर मूल थिक युध्य > जुज्झ > उज्झ > उझ > उज। मूलहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे एकर अर्थ लड़ाइ-झगड़ा, प्रतिद्वन्द्विता आ' कलह थिक। सभसँ रोचक उदाहरण अछि कटाउझ < कटअजुज्झ < कृतकयुद्ध "नकली लड़ाइ, जेना कुकुर क्रीड़ामे अनका करैत रहैत अछि", उपराँझ < उपरियुद्ध, "हम उपर तँ हम उपर एहि बातक लड़ाइ"; भिनाउझ "भैआरी बटबाराक विवाद", बभनौज "बाभन सभक दक्षिणा हेतु अन्नहिमे लड़ाइ।"

ऊ-ई किछु प्रकारक व्यक्तिवाचक नाममे आदर प्रकट करबाक हेतु लगाओल जाइत अछि। यथा, मुसहरू, सोनू, गोनू, बगड़ू, टहलू, जोगू, बौकू; तथा किछु प्रकारक समासक अन्तमे अबैत अछि। यथा, एकमस्सू, अखरकट्टू, अधजन्मू। मूल प्राय उक।

ऐआ-ई सामान्य सम्बन्धक बोधक थिक । यथा, घरैया "घर सम्बन्धी, विशेषत: गाम-घरमे रहनिहार पशु", विप. बनैआ; समैया "समय अर्थात् स्वोचित ऋतुमे भेनिहार, सामयिक" मूल प्राभा इक ।

ऐत-ई कर्तृवाचक विशेषण बनबैत अछि । यथा घटकैत "घटकक काज कयनिहार", डकैत "डाका देनिहार", गोड़ैत, सभैत, फनैत, सेबैत, सपठैत, लठैत, ठेकैत ओहदैत, भोजैत, घरैत, अङनैत) । ईसभ विभिन्न प्रकारक काज कयनिहार थिक । मूल प्राभा पति, जेना घरैत < गृहपति; प्राभा आयुक्त, जेना सेबैत-सेवा आयुक्त ।

ऐती-ऐत सँ विशेषण बनैत अछि, ऐति सँ संज्ञा । ई स्पष्ट नहि होइत अछि जे ई ऐत + ई थिक कि भिन्न प्रत्यय । उदाहरण देखल जाय : कुटुमैती "कुटुम्बमूलक सम्बन्ध/व्यवहार", अपनैती "आप्तता, घनिष्ठता", घटकैती "घटकक व्यवसाय" ।

ऐल-ई अनेक मूल आ अनेक अर्थबाला प्रतीत होइत अछि । यथा, रखैलि "आरक्षित दासी, उपपत्नी", धोधैल "धोधिबाला", डङैल "डाङ बाला, लठैत", कोनैल "कोनपर अवस्थित", पथरैल "पाथर बाला (बाट आदि)", बँसैल, बँसैला "बाँससँ बनल" । ई सभटा सामान्यत: धारणार्थक थिक । एकर मूल मभामे कतहु-कतहु भेटैत अछि-इल्ल । उत्तरकालीन संस्कृतमे तुण्डिल, ग्रन्थिल इत्यादिमे अछि । अन्य मूलक आ' अन्य अर्थक उदाहण अछि कनैल, प्रामै. कन्हैल (<स्कन्धकील)" "पालोक खुट्टी जे बड़दक कान्हलग रहैत अछि"; थनैल (<स्तनकील) "एक स्तनरोग", समैल (<शाम्याकील) "समाठक वलय" ।

ओ-ई आदरार्थक प्रत्यय थिक जे कतोक महिलाक नाममे लगैत अछि । यथा मुनरी, आदरमे मुनरो, सुनरी : सुनरो, खजनी : खजनो ।

औ-ई निर्मित अर्थमे निर्माणकर्ताक वाचक वा निर्माण-सामग्रीक वाचक शब्दमे लगाओल जाइत अछि । यथा चमरौ "चमारक बनाओल (जूता आदि)", डोमौ बासन, बभनौ "ब्राह्मण सम्बन्धी", टटौ "टाटबाला (घर)", खोपौ "खोपक आकारक बखारी", मूल उक ।

औअलि-दे. औबलि ।

औआ-ई मूलत: आउ + आ थिक । यथा बिकाउ + आ बिकौआ "बिकएल वा बिकएनिहार", चढ़ौआ "देवताकेँ चढ़ाओल", देखौआ "केलव देखयबाक हेतु कयल", बझौआ "बझाएकेँ आनल", चमकौआ "चमकय बाला", गमकौआ "गमकय बाला", पड़ौआ "पड़ाकेँ आएल", झगड़ौआ "झगड़ाबाला" । तु. हिन्दी बिकाऊ, चढ़ाऊ, दिखाऊ ।

औट-एकर रूपान्तर अछि औटा तथा औटी। एकर मूल थिक प्राभा पट्ट/पट्टिका यथा सिलौट (<शिलापट्ट) "मसाला पिसबाक शिलाखण्ड", चनरोटा (चन्दनपट्टक), चमौटी (< चर्मपट्टिका), कन्हौटी (< स्कन्धपट्टिका), मेहौटी "मेह महक बीड़ा" कसौटी (< कसपट्टिका)। एकर दोसर मूल थिक पात्र वा पत्रिका। यथा, पथरौटी (< प्रस्तरपात्रिका), चुनौटी (< चूर्णपात्रिका), कजरौटी (< कज्जलपात्रिका)। किछु शब्दमे एकर मूल स्पष्ट नहि अछि। यथा जनमौटी "नवजात शिशु सम्बन्धी", मरौटी "सद्यः मुइल लोकसँ सम्बद्ध (वस्त्र आदि)", भखौटी "सरल भाषामे कहल, मौखिक (संवाद)", गंगौट "गंगासँ आनल माटि", कुम्हरौट "कुम्हार द्वारा व्यवहृत माटि।" अन्तिम दू शब्दमे एकर मूल मृत्तिका भ' सकैत अछि।

औड़ी-एकर मूल थिक प्राभा पुत्र। यथा पितिऔत (< पितृव्यपुत्र), मसिऔत, पिसिऔत, ममिऔत। एहिमे इकार पिसिऔत इत्यादिक सदृशानुकरणवश आएल। सतौत, बहिनौत, डकौत (< डाकपुत्र), किसनौत (< कृष्णपुत्र) "गोआर जातिक एक वर्ग", गुहलौत, "क्षत्रिय जातिक एक वर्ग", बनिऔत।

टिप्पणी-ओट, ओख, ओठ, ओटा एहन-एहन अवसानबाला बहुत रास शब्द अछि जे स्पष्टतः यौगिक थिक, किन्तु एहि प्रत्यय सभक उदाहरण बहुत कम, प्रायः एके दुइटा, भेटैत अछि आ' मूल सेहो बड़ अस्पष्ट। किछु उदाहरणमात्र देखल जाए-**अन्हरोख** (< अन्हार + उषा), झरोखा, डँटोखा, भजोखा, हथोखा, अधोखा, अमाओट, अमोट, सेजोट (शय्यापट), धनिकोट, फरिछोट, बरदोठ, घुरोठ, ओझरोट, तरोटा (तलपट), उपरोटा, छनोटा, सनोटा, बन्होटा, पहिलठ, इत्यादि।

औबलि-द्र. § 37 (210)।

का-ई प्रभेदार्थक थिक। मूल अज्ञात। उदाहरण बहुत। यथा छोटका, बड़का, चकरका, हरिअरका, करिक्का, ललका, नबका, पुरनका इत्यादि।

कार-ई ध्वन्यनुकरणार्थक थिक। यथा होहकार, ललकार, बमकार, फुफुकार, चुचुकार, टिटकार। **कारा-कारी** एकर रूपान्तर थिक। यथा होहकारा, होहकारी, ललकारा, टिटकारी।

खोर-एकर मूल थिक फारसी, खोर यथा हरामखोर, घुसखोर, गरदखोर, हलालखोर, हलखोर।

गर-एकर अर्थ पूर्वमे देखाओल गेल (§ 37(ii)) । कतहु कतहु आधिक्य सेहो ध्वनित होइत अछि। जेना ललितगर, "अधिक ललित", भरिगर "अधिक भारी", उचगर। प्रचुर उदाहरणो ओतहि देखू। एकर मूल सुभद्र झा प्राभा कर् कहैत छथि परन्तु कर् केर क् कतहु ग् होइत नहि देखल गेल अछि। एक अन्य विद्वान् एकर उद्भव प्राभा गर्भ सँ मानैत छथि - तेलगर < तेलगई < तैलगर्भ। परन्तु ई दूनू जँचैत नहि अछि।

गिरी-ई फारसी भेटैत अछि। पहिल लघुत्व अर्थमे। यथा बेङ्ची, डेगची, सनुकची। दोसर व्यवसाय अर्थमे। यथा मसालची, तबालची।

ठा-कतोक शब्दमे ई स्थानसँ उद्भूत प्रतीत होइत अछि। यथा छनठा घोड़ा जे छान मे स्थित रहैत अछि, एकट्ठा, अमठा "आमक काठ" तथा लओठा < नवकाष्ठ "बिनु खिआएल हर।"

ठी-एकर मूल थिक यष्टि "डाँट" यथा सनठी "सनपटुआक डाँट", धुनठी "धुनिआक धनुष", लहठी (< लाक्षायष्टि), दीअठि "दीपयष्टि", लुकाठी (< उल्कायष्टि), खोरनाठी।

ड़ा-ई स्वार्थिक (अर्थहीन) प्रत्यय थिक जे मभामे पाओल जाइत अछि। छबड़ा (प्राभा शाव/शावक + ड़ा) "माछक बच्चा", चामसँ चमड़ा, मोटसँ मोटड़ा, मोटड़ी, बाछासँ बछड़ा, बहुसँ बहुड़िया, सासुसँ ससुड़ी, टाँगसँ टँगड़ी, लङ्ड़ा (लंग+ड़ा)।

ताइ-एकर उद्भव-कथा विचित्र अछि। ई थिक ता+इ। दूनू प्रसिद्ध भाववाचक। अज्ञतावश दूनू प्रत्यय कोनो-कोनो शब्दमे जोड़ा गेल। एहन अज्ञताक उदाहरण एखनहु भेटैत अछि-सैन्दर्यता, औचित्यता इत्यादि। उदाहरण दुइये-तीन टा अछि, सिमिरताइ, दिनताइ, गरिबताइ।

दार-एकर मूल थिक फा. दार, संस्कृत धार। एकर प्रयोग धारक अर्थमे होइत अछि। यथा जमिनदार, थानादार, हबलदार, चौकीदार। ई सभ विदेशी शब्द थिक जे मैथिलीमे एखन अनकूलित नहि भेल अछि। तहिँ एहि सभमे मात्रा-सन्तुलन नहि देखल जाइत अछि।

धी-एकर मूल थिक दुहिता जे अति प्रचलित होयबाक कारण अत्यधिक स्वनविकार मभा-कालहिमे पओलक। एकर प्रयोग स्वतन्त्रो रूपमे होइत अछि। यथा धी जमैया भगिना ई तीनू ने अपना। उदा. बहिनिधी, सतधी, जैधी।

नि/नी-ई दूनू स्त्री-प्रत्यय थिक। अतः देखू (§ 47)।

पन/पना/पनी-ई तीनू भाववाचक संज्ञा बनबैत अछि। यथा, नेनपन/नेनपना/नेनपनी "नेनाक भाव, स्वभाव वा व्यवहार", चुगिलपन, गमरपन, चतुरपन, बुड़िपनी, अबरपनी। एकर मूल थिक आत्मन् जे विचित्र रीतिएँ विकसित होइत मभा मे प्पा (तुल. वैदिक त्वन) भेल। लगैत अछि अप्प आ' त्वन दूनू मिलि अप्पन भ' अपन भ' गेल। एहिमे आ/ई स्वार्थिक थिक।

बई-एकर मूल थिक सं. पति। यथा, प्रामै. हटबइ "हाट-पति, हाटक प्रबन्धक", नमै. हटबय "हाट पर तौलबाक व्यवसाय कयनिहार"; बधबय "बाधक पति, अर्थात् जकर खेत एक बाधमे पड़ैत हो", पुरबइ < पुरपति, पुरबे (उपनाम), घरबइ, नमै. घरबैया, घरबइ + आ।

बन्त-देखू मन्त।

बा-ई दुइ दिशावाचकमे लगैत अछि। एकर मूल थिक प्राभा वात। यथा पछबा (> पश्चवात) "पच्छिमसँ अबैत बसात", पुरबा (< पूर्ववात > पुरुबबा > पुरुबा > पुरबा)। अनादरार्थक बा एहिसँ भिन्न थिक (§ 37)।

बाज-ई फारसी बाज केर मैथिली पर्याय थिक। यथा रंडीबाज, जुआबाज, निसाँबाज, दगाबाज, धोखाबाज। व्यसन अर्थमे भाववाचक संज्ञा **ई** लगाय बनैत अछि। यथा रंडीबाजी। दार जकाँ इहो मैथिलीमे अनुकूलित नहि भेल अछि, तेँ मात्रा-सन्तुलन नहि देखल जाइत अछि।

बार[1]-एकर मूल थिक सं. पाल। तदनुसार ई परिगणित शब्दमे पालनकर्ता अर्थमे लगैत अछि। यथा गैबार "गाइक पालक"; महिसिबार, घटबार, डिहबार।

बार[2]-एकरो मूल तँ पाल सैह प्रतीत होइत अछि, परन्तु अर्थ बहुत बदलि गेल अछि। यथा पलिबार "पाली गामक मूल निवासी, अर्थात् जनिक पूर्वज कहिओ पाली नामक गाममे बसैत छलाह।" ई पाल सँ बार भेल आ तखन एकर अर्थ "बाला" भ' गेल; पलिबार "पाली गाम बाला → पाली गामक मूल निवासी → जनिक पूर्वज पाली गाम मे बसैत रहिथ।" निवासी अर्थमे पाल (< पालक) शब्दक प्रयोग प्रतिष्ठासूचक छल, निवासिय नहि, ओकर पालक > संरक्षक > गर्जिअन सेहो, जेना घरबाली। तुलनीय पलिबार "पालीबाला, पाली गामक मूल निवासी"; अगरवाल "आगराक मूल निवासी", बरनवाल "वाराणाक (बनारसक) मूल निवासी" "महिसबाला", महिसबार। अर्थविकासक अद्‌भुत उदाहरण। देखू बाला सेहो।

बारि-ई चारू दिशाक नाममे लगैत अछि। यथा दछिनबारि (घर) "दक्षिण दिशामे अवस्थित"। एहिना पछबारि, पुबारि, उतरबारि। पुबारि मे ब् ध्वनिक द्विरुक्तिपरिहार (पूबबारि > पुबारि) द्रष्टव्य। एकर मूल थिक संस्कृत पल्लि, पालि, पाली "प्रान्त, प्रदेश, टोल", यथा पुबारि > पूर्वपालिक "पूब प्रान्त (भाग) मे अवस्थित"। रखबारि इत्यादिक बारि एहिसँ भिन्न प्रकारक थिक जे बार मे व्यवसायार्थक इ लगा बनल अछि।

बाला-ई धारणार्थक प्रत्यय हिन्दीक प्रभावेँ हालमे मैथिलीमे आयल आ' बंगलामे सेहो प्रवेश पाबि रहल अछि। प्रामै. आ' ममै. मे ई नहि पाओल जाइत अछि। मैथिलीमे, हिन्दीजकाँ, ई सार्वत्रिक थिक, अर्थात् सभ शब्दमे लगाओल जा सकैत अछि। एकरा प्रत्यय नहि कहि सकैत छी। किएक तँ ई लगलापर ने एकपदत्व होइत अछि ने मात्रासन्तुलन, अर्थात् पूर्वपद जहिनाक तहिना रहि जाइत अछि। तेँ दूधबाला, पानबाला ई सभ पदबन्ध थिक। एकर मूल थिक पालक। एकर अर्थक विकासक्रम उपर बार शब्दमे देखू।

बाह-एकर अर्थ थिक कोनो उपकरण चलओनिहार वा कोनो भार उघनिहार। यथा हरबाह, जलबाह, कोदरिबाह, गुनबार "नौकाक रस्सी खिचनिहार", ढलबाह, कोरबाह। मूल प्राभा वाह। एहिमे व्यवसायवाचक **इ** लगैत अछि - हरबाहि। एहिना पारिश्रमिक अर्थमे **ई** लगैत अछि। यथा हरबाही "हरबाहक बोनि वा पारिश्रमिक", चरबाही।

बाहि-एकर मूल थिक सं. व्याधि। यथा मथबाहि "माथक व्याधि अर्थात् दर्द" सुलबाहि, छेड़बाहि, पेटबाहि। व्याधि अर्थमे एहि प्रत्ययक किछु रोचक लाक्षणिक/आलंकारिक प्रयोग प्रचलित अछि। यथा हकबाहि (हाक + व्याधि) "वारंवार हाक पारैत रहबाक व्याधि (प्रकृत्ति)", मुतबाहि, सुतबाहि, कनबाहि। ई प्रत्यय किछु आओर शब्दमे भेटैत अछि। यथा कातसँ कतबाहि। एकर मूल वाह्य भ' सकैत अछि। सुनबाहि, उद्यबाहि एहि सभमे बाहि थिक बाह + ई (भाववाचक)।

मन्त-एकर मूल थिक सं. मत्/मन्त्। यथा धनमन्त, गुनमन्त, पुमन्त। नमै. मे एकर बदला मान्/वान् चलैत अछि। एकर रूपान्तर थिक बन्त। यथा बलबन्त, गुनबन्त।

मा-ई अनादर-द्योतक प्रत्यय थिक। यथा सोनू, सोनमा; गोनू, गोनमा।

ल-ई युक्त अर्थमे लगैत अछि। यथा धोधिसँ युक्त धोधिल, अभागसँ युक्त अभागल; पियासल, भूखल। एकर मूल थिक मभा इल्ल, इल, ल। एकले, दोले, एकरे कारकरूप थिक।

सर-ई दू आ तीन सँ क्रमवाचक रूप बनबैत अछि। यथा दोसर, तेसर। परन्तु एकसर केर अर्थ "पहिल" नहि, एकाकी होइत अछि। एहि एकसर क उद्‌भव सेहो विचित्र प्रकारेँ भेल अछि। एक सरँ मनमथ दुइ जिब मारए "कामदेव एके सरेँ अर्थात्

तीरसँ दू प्राणी पर प्रहार करैत छथि", की एही विद्यापतिक एक सर सँ एकसर शब्दक जन्म भेल अछि ?

सार-एकर अर्थ थिक क्षमता वा योग्यताबाला। यथा चलनसार "चलबाक योग्य प्रचलित", फड़नसार, मिलनेसार। घोड़सार, हथिसार, कमरसारि गोहाल एहि सभक मूल थिक सं. शाला।

हन-एकर मूल थिक प्राभा धान्य "अन्न"। यथा तेलहन "तेलबाना अन्न", बीहन "बीजक हेतु राखल अन्न", भुसहन "भूसाबाला अन्न जेना धान, जओ", मुरहन "मूल (पहिल तोड़मे बहराएल) अन्न", दलिहन "दालिक अन्न", घटिहन "घाटिबाला अन्न", एकहन "एक प्रकारक अर्थात् प्रभेदान्तरसँ अमिश्रित अन्न", एहिना दोहन "दू प्रकारबाला मिश्रित अन्न"; तेहन गरुहन "भारी आ मोट दानाबाला अन्न", चौहन वा चौहन्ना "अनेक प्रभेदक मिश्रित अन्न", मरहन्ना "मृत दानाबाला"।

हर-एकर अनेक मूल अछि। (1) घट। यथा खिरहड़ (क्षीरघट), घरहड़ "घरक पवित्र घैल", छुबहड़, सिरहड़ (श्रीघट), पुरहड़, हथहड लगहहु। (2) गृह। यथा, पछहर (पश्चगृह) "पछुआड़क घर शौचालय" मनहर, खँडहर, सिकहर, नइहर, तरहरा (तलगृह), बसहर (वासगृह) "नवागत वधूक वासकक्ष, नाग", धरहरा (धारागृह)। (3) धर-"धारक, पात्र", यथा धुपहर "धुपदानी", अगिहर "अङीठी"। (4) स्थल, यथा-धनहर, खरहर, फुलहर। (5) हर- यथा मुसहर, भेड़िहर, डोकहर, सपहर।

हरा-एकर मूल थिक सं. शर जकर अर्थ थिक छड़ (हिन्दी लड़ी), पाँती। यथा, एकहरा "एक छड़बाला", दोहरा, तेहरा (रूपान्तर दोहारा, तेहारा)।

हरि-लगहरि गाए; धरहरि "बीच बचाओ"; दोहरि, तेहरि, खढ़हरि, कँकोड़हरि।

हा-प्रकार/प्रभेद अर्थमे पाओल जाइत अछि। यथा मिठहा, घिबहा, भड़हा, छोटहा, निकहा, थोथहा। एकर मूल आह + आ भ' सकैत अछि, जेना घिबाह सँ घिबहा (प्रकारार्थक)।

हार-ई व्यवसायी अर्थमे किछुए शब्दमे भेटैत अछि। यथा, बोनिहार, "बोनि (> पण्य) कमएनिहार"; टिकुलिहार, मनिहार, सुतिहार, बकरिहार, फँसिहारा, घसिहारा, लकड़िहार।

हिआ-व्यापारी अर्थमे दुइए-तीन शब्दमे भेटैत अछि। यथा घोड़हिआ, गदहिआ। मूल अनुसन्धेय।

होरि-अर्थ स्थान, मूल स्थली। यथा, खढ़होरि "खढ़ उपजबाक स्थान", कँकोड़होरि।

सामासिक शब्द

§ 38. समास (Compound)

जखन दू वा अनेक शब्द मिलि एक भ' जाइत अछि तखन ओ समास (compound) कहबैत अछि। वैदिक भाषामे केवल दू शब्दक समास भेटत; कदाचिते तीन शब्दक। पश्चाति समासमे शब्दक संख्या बढ़ैत गेल आ' संस्कृत साहित्यक शीर्षकालमे आबि ई संख्या दस-बीस के कहए पचासहुसँ उपर चल गेल। लगले एकर तीव्र प्रतिक्रिया भेल आ' एहि विषयमे नभा पुन: वैदिके भाषा जकाँ दू शब्द पर आबि गेल। ततबे नहि, नब-नब समास गढ़बाक परिपाटिओ उठि जकाँ गेल। फलत: मैथिलीमे सम्प्रति जे किछु समास अछि ताहिमे अधिकतर पूर्वकालीन समासक तद्भव अवशेष थिक।

मैथिलीमे समासक विषयमे बहुत रास विशेषता अछि जे आगाँ स्पष्ट कयल जायत। विचित्र बात ई जे एतेक विशेषता रहितहुँ मैथिलीक दुइ महान् भाषाशास्त्री सुभद्र झा आ' रामावतार यादव मैथिली समासक विवेचन उपेखि देलनि।

अस्तु, विवेचनमे सुविधार्थ पहिने मैथिली समासक परम्परानुसारी वर्गीकरण आ' उदाहरण देखल जाय।

रचनानुसार मैथिलीमे समास दू प्रकारक अछि-(i) शब्द + शब्द, जेना पनिबट (पानि + बाट), तथा (ii) शब्द + क्रिया, जेना आँखिफोड़ा "जे आँखि फोड़ए"। पहिलकेँ नामोत्तरपद कहि सकैत छी तँ दोसरकेँ क्रियोत्तरपद (पाणिनि-परम्परामे उपपद समास)।

शब्दवर्गानुसार समास दू प्रकारक होइत अछि, संज्ञा आ' विशेषण। यथा पनिबट संज्ञा थिक, ललमुहा विशेषण। घटक नामहुक अनुसार ई दू प्रकारक होइत अछि। (i) संज्ञा + संज्ञा, यथा तमघैल (ताम + घैल), (ii) विशेषण + संज्ञा, यथा भलमानुस (भल + मानुस), चौमुख (चारि + मुख)।

समासक वर्गीकरण अनेक प्रकारेँ भ' सकैत अछि। सभसँ पुरान आ' भारतीय भाषाक हेतु सभसँ उपयुक्त वर्गीकरण अछि तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि आदि।

(1) तत्पुरुष (determinative compound)– जतए पूर्वपद (समासक पहिल शब्द) मे सम्बन्ध कारक चिह्न लुप्त कयल हो से तत्पुरुष कहबैत अछि। यथा पानिक बाट पनिबट, बाभनक गाम बभनगामा, फूलक बाड़ी फुलबाड़ी। तत्पुरुष ई नामकरण उपमामूलक थिक-जेना तस्य पुरुष: तत्पुरुष: तेना बनल समास तत्पुरुष। मैथिलीमे सभसँ अधिक प्रयोग एही समासक होइत अछि।

(2) कर्मधारय (attributive compound)– जतए पूर्वपद उत्तरपदक विशेषण हो से कर्मधारय समास कहबैत अछि। यथा, आन धान अनधना, भल मानुस भलमानुस, रकतकोईं, नवगछुली। ई समास मैथिलीमे विरल अछि।

(3) बहुव्रीहि (exocentric वा possessive compound)–जे समास अपन अन्तर्गत दूनू पदसँ बोधित वस्तुक "धारक" अर्थ दैत अछि से बहुव्रीहि कहबैत अछि। यथा लाल मुहक धारक (अर्थात् लाल मुह बाला) लालमुहा रोहु।

(4) द्वन्द्व (copulative compound)–जखन दू संज्ञा वा विशेषण समुच्चित रहैत अछि आ' बीचमे योजक निपात आ'/आओर लुप्त रहैत अछि तखन ओ समुच्चय द्वन्द्व कहबैत अछि। यथा, दालिभात, दिनराति, छोट-पैघ।

दोसर दृष्टिएँ तत्पुरुष समासकेँ व्यधिकरण समास कहि सकैत छी, कर्मधारय केँ समानाधिकरण समास, किएक तँ अर्थतः तत्पुरुषमे पूर्व पद भिन्न कारक (सम्बन्ध कारक) मे रहैत अछि, किन्तु कर्मधारयमे दूनू एके कारकमे। परन्तु एहि विभाजनमे बहुव्रीहि सेहो व्यधिकरण समास कहाओत।

(5) कृदन्त समास-किछु समास एहनो अछि जाहिमे एक शब्द कृदन्त हो। यथा, पीचल नाकबाला नकपिच्चा, मुह दुसनिहार मुहदुस्सा। संस्कृत व्याकरणमे एहन समास उपपद समास कहबैत अछि। एहिमे उत्तरपद कृदन्त रूपमे रहैत अछि, जेना संस्कृतमे ग्रन्थकार। मैथिलीमे एकरा कृदन्त समास कहि सकैत छी।

(6) उपपद-समास-उपपद समास से थिक जकर पूर्वपद शुद्ध पद नहि, उपपद वा उपसर्ग (prefix) रहैत अछि। वर्णमाला-क्रमेँ प्रत्येक उपपदसँ बनल समास एतय देखाओल जाइत अछि :

अ-अकलेस "बिनु कष्टेँ", अबेर "बेरक उल्लंघन, विलम्ब", अनोन, अघट "घाटसँ भिन्न नदीतट", अभाग, अकाज "अघलाह काज", अलूरि, अकठ।

अन-अनचिन्हार, अनसोहाँत "अशोभनीय", अनजान, अनचोक "अलक्षित" (चोक "चक्षु"), अनभोआर।

अप-अपगरानि, अपढंग।

उ-(> उत्)-उबानि "उनटा बानि", विप. सुबानि; उरेब. विप. सुरेब; उरिन "ऋणमुक्त", उफाँटि, वि. प. सुफाँटि।

कु-कुचालि, कुदेस, कुबेर, कुठाम, कुकरमी।

गर-(फारसी)-गरहाजिर, गरमजरुआ।

दर-(फारसी) "अनुवर्ती"-दरदेआद "देआदक देआद", दरसूदि "सूदिक सूदि", दररैअति "रैअतिक रैअति", दरकबाला।

नि-निरोग, निदरदी, निमून, निधोक, निमुह।

बद-बदमास, बदचालि, बदहबास।

बे-बेजान, बेकार, बेतार, बेगार, बेदरदी, बेकसूर, बेअदबी, बेमाक (बेबाक)।

स-सबेर, सकाल, सनाथ, सकुशल, समङगर (< समङ्कल)। समाङ+गर एहि भ्रान्त व्युत्पत्तिसँ समाङ "स्वजन" शब्द बहराएल अछि।

सु-सुकाठ, विप. अकठ; सुबानि, सुरेब, सुठाम।

39. मैथिली समासक विशेषता

(1) समासक विषयमे कतोक बात मैथिलीक हेतु विशेष अछि। समासमे दूनू नाम मिलि एक नाम भ' जाइत अछि, तेँ एहिमे मात्रासन्तुलन नियम [19] सर्वदा लगैत अछि जाहिसँ पूर्वपदक सभ स्वर लघु भ' जाइत अछि। यथा भाँटाक बड़ भटबड़; पीचल नाक बाला नकपिच्चा। अङरेजी, हिन्दी आदिक समासमे दूनू नाम सामान्यतः अविकले रहैत अछि।

यदि मात्रा-सन्तुलन मैथिली समासक मुख्य लक्षण मानी तँ द्वन्द्व समास मैथिलीमे समासक कोटिमे नहि आओत किएक तँ एहिमे मात्रा-सन्तुलन कतहु नहि होइत अछि। यथा भातदालि, साँझपरात। द्वन्द्वहिमे नहि, किछु तत्पुरुषो समास एहन चलैत अछि जाहिमे मात्रा-सन्तुलन नहि होइछ। यथा घोड़ा-गाड़ी, नाच-घर, लीची-बाड़ी। एहन समासकेँ जँ समास नहि कहब तँ कोनो नव नाम देबाक होयत। की पदयुग्म उपयुक्त होयत ? समासक जे व्यापक लक्षण छैक कारक चिन्ह आ' योजक अव्ययक लोपन से तँ एहू सभमे अछिए।

(2) प्रसंगवश इहो ज्ञातव्य जे ई मात्रा-सन्तुलन उर्दू (अरबी-फारसी) मूलक समासमे नहि पाओल जाइत अछि। यथा हरामखोर, वादाखिलाफी, शाहपसन्द, राहगीर। मैथिलीमे सेहो अरबी-फारसीक तद्धित प्रत्यय लगलापर मात्रा-सन्तुलन नहि होइत अछि। यथा, निसाँखोर, रंडीबाज, जुआबाज, मजेदार, गद्दीदार। एकटा अपवाद अछि हरमजदगी।

(3) मैथिलीक समासमे मात्रा-सन्तुलनक संगहि कतहु-कतहु स्वराघातक स्थान परिवर्तन सेहो देखल जाइत अछि। एकर फलस्वरूप कतहु अन्तिम स्वर गुरु भय जाइत अछि। यथा चौमासा, सतघरा, बहरघरा, अठपहरा।

(4) मात्रा-सन्तुलनक फलस्वरूप, प्राचीन स्वरूप टिकल रहि जयबाक कारणेँ, स्वराघातक स्थान बदलबाक कारणेँ अथवा बिनु कारणहु समासक दूनू पदमे नाना प्रकारक परिवर्तन होइत अछि। यथा

(क) पूर्वपदमे दू, तीन, चारि केर स्थानमे क्रमशः दो-, ते- तथा चौ-। यथा, दोदिना, तेगुना, चौबट्टी।

(ख) उत्तरपदमे- आ, ई तथा ऊ लागब। यथा, बरहसिंघा, चौमासा, घर पैसा, छमसिया, चौबट्टी, अधपक्कू, ठमछोड़ू। एकरा सभकेँ प्रत्यय नहि, रूपस्वनिमिक विकार बुझबाक चाही।

(ग) कृदन्त उत्तरपदमे धातुक व्यंजनक दोहराएब, तथा अल प्रत्ययक स्थानमे ऊ। यथा गाछमे पाकल गछपक्कू; घुन लागल घुनलग्गू, भूतक चाटल भुतचट्टू। व्यंजनक दोहराएब आ तथा ऊ प्रत्ययसँ पूर्व देखल जाइत अछि, यथा, पीचल नाक बाला नकपिच्चा, आठ मासक अठमस्सू। इहो सभ रूपस्वनिमिक विकार थिक।

■